Model: Duastro-Dasha-Analysis

SrNo: 115-120-105-3261 / 1031 Date: 21/02/2025

लिंग	स्त्रीलिंग
जन्म तिथि	**01/01/2000**
दिन	शनिवार
जन्म समय	**13:01:00 घंटे**
इष्ट	14:27:23 घटी
स्थान	**.Delhi**
राज्य	Delhi
देश	India

अक्षांश	28:37:00 उत्तर
रेखांश	77:12:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:21:12 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	12:39:48 घंटे
वेलान्तर	-00:03:12 घंटे
साम्पातिक काल	19:20:54 घंटे
सूर्योदय	07:14:02 घंटे
सूर्यास्त	17:35:01 घंटे
दिनमान	10:20:59 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल)	दक्षिण
ऋतु	शिशिर
सूर्य के अंश	16:19:31 धनु
लग्न के अंश	04:22:29 मेष

चैत्रादि संवत / शक	2056 / 1921
मास	पौष
पक्ष	कृष्ण
सूर्योदय कालीन तिथि	10
तिथि समाप्ति काल	11:03:58
जन्म तिथि	11
सूर्योदय कालीन नक्षत्र	स्वाति
नक्षत्र समाप्ति काल	18:33:26 घंटे
जन्म नक्षत्र	स्वाति
सूर्योदय कालीन योग	सुकर्मा
योग समाप्ति काल	12:37:23 घंटे
जन्म योग	धृति
सूर्योदय कालीन करण	विष्टि
करण समाप्ति काल	11:03:58 घंटे
जन्म करण	बव

अवकहड़ा चक्र

लग्न–लग्नाधिपति	मेष – मंगल
राशि–स्वामी	**तुला – शुक्र**
नक्षत्र–चरण	**स्वाति – 4**
नक्षत्र स्वामी	राहु
योग	धृति
करण	बव
गण	देव
योनि	महिष
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	शूद्र
वश्य	मानव
वर्ग	सर्प
युँजा	मध्य
हंसक	वायु
जन्म नामाक्षर	ता–तनुजा
पाया(राशि–नक्षत्र)	ताम्र – रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	मकर

घात चक्र

मास	माघ
तिथि	4-9-14
दिन	गुरुवार
नक्षत्र	शतभिषा
योग	शुक्ल
करण	तैतिल
प्रहर	4
वर्ग	गरूड़
लग्न	कन्या
सूर्य	कन्या
चन्द्र	मीन
मंगल	तुला
बुध	कर्क
गुरु	वृश्चिक
शुक्र	धनु
शनि	सिंह
राहु	मकर

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			मेष	04:22:29	481:55:51	अश्विनी	2	1	मंगल	केतु	चंद्र	———
सूर्य			धनु	16:19:31	01:01:10	पूर्वाषाढ़ा	1	20	गुरु	शुक्र	चंद्र	मित्र राशि
चंद्र			तुला	17:13:20	12:03:00	स्वाति	4	15	शुक्र	राहु	शुक्र	सम राशि
मंगल			कुंभ	03:57:55	00:46:32	धनिष्ठा	4	23	शनि	मंगल	शुक्र	सम राशि
बुध		अ	धनु	07:44:44	01:33:19	मूल	3	19	गुरु	केतु	गुरु	सम राशि
गुरु			मेष	01:23:32	00:02:24	अश्विनी	1	1	मंगल	केतु	शुक्र	मित्र राशि
शुक्र			वृश्चि	07:29:12	01:12:32	अनुराधा	2	17	मंगल	शनि	केतु	सम राशि
शनि	व		मेष	16:32:46	00:01:13	भरणी	1	2	मंगल	शुक्र	चंद्र	नीच राशि
राहु	व		कर्क	10:06:35	00:03:09	पुष्य	3	8	चंद्र	शनि	शुक्र	शत्रु राशि
केतु	व		मक	10:06:35	00:03:09	श्रवण	1	22	शनि	चंद्र	चंद्र	शत्रु राशि
हर्ष			मक	20:56:48	00:03:01	श्रवण	4	22	शनि	चंद्र	शुक्र	———
नेप			मक	09:19:59	00:02:08	उत्तराषाढ़ा	4	21	शनि	सूर्य	शुक्र	———
प्लूटो			वृश्चि	17:35:42	00:02:07	ज्येष्ठा	1	18	मंगल	बुध	बुध	———
दशम भाव			धनु	24:49:09	--	पूर्वाषाढ़ा	--	20	गुरु	शुक्र	बुध	--

व – वक्री स – स्थिर
अ – अस्त पू – पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट
चित्रपक्षीय अयनांश : 23:51:11

लग्न–चलित

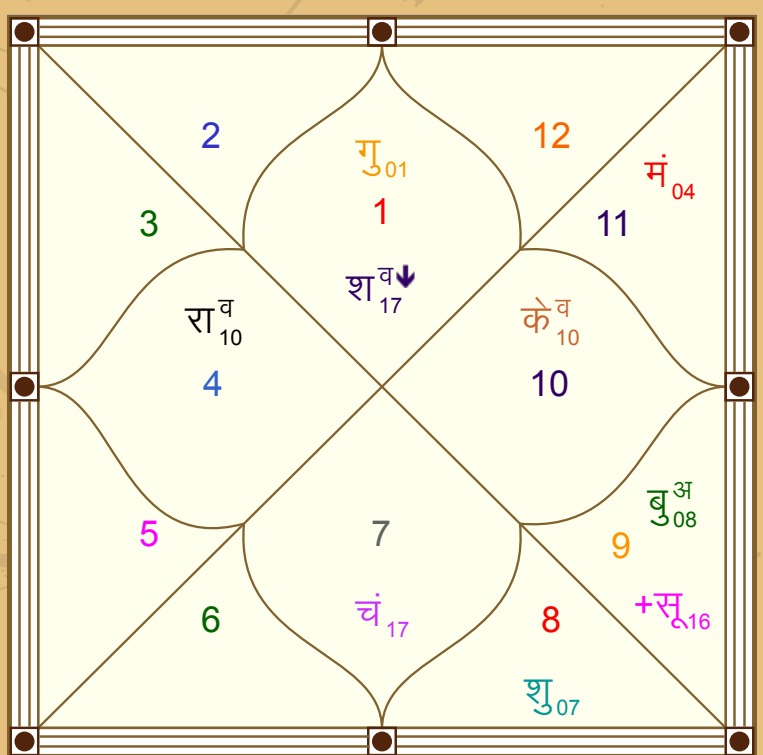

चन्द्र कुंडली

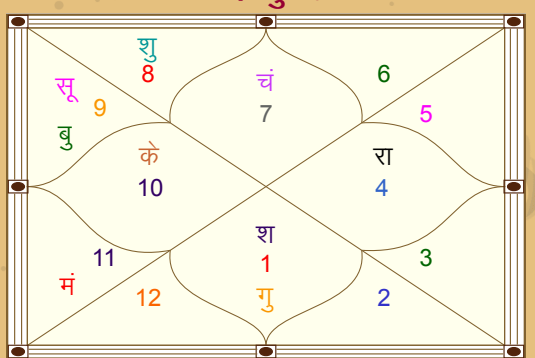

नवमांश कुंडली

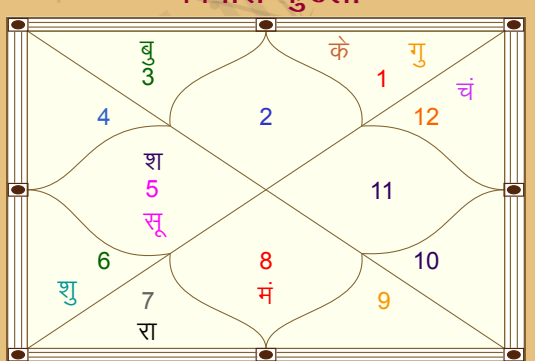

दशा विश्लेषण

महादशा :– राहु
(01/01/2000 - 02/10/2003)

राहु की महादशा 01/01/2000 को आरम्भ होकर 02/10/2003 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 18 वर्ष है। आपकी जन्म कुण्डली में राहु चतुर्थ भाव में स्थित है। इस स्थान से राहु की दृष्टि दशम भाव पर है। इसके पूर्व आपकी 7 वर्ष की मंगल दशा चल रही थी। मंगल के कारण आपको यश, ख्याति, जीविका में प्रगति और समृद्धि की प्राप्ति होगी। राहु की इस दशा के दौरान आपको सम्पत्ति और लाभ की प्राप्ति, अचल सम्पत्ति तथा सुख में वृद्धि होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप शक्तिशाली होंगे। एक सन्तुलित जीवन के फलस्वरूप आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। मौसम में परिवर्तन के फलस्वरूप चर्मरोग, पाचन–समस्या, हृदय संबंधी समस्या, विषाणुजन्य संक्रामक रोग आदि हो सकता है। थोड़ी सावधानी से इन रोगों से बचा जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

आपकी आर्थिक स्थिति मजबूत होगी। आपको सभी भौतिक सुख मिलेंगे। आपको माता से लाभ मिल सकता है। आपको जहाँ तक सम्भव हो सट्टे से बचना चाहिए। व्यावसायिक उपार्जन, व्यापार से आय अच्छी होगी। जीविका तथा व्यवसाय के लिए विधि के क्षेत्र, विमान उड्डयन, विमान–चालन, कला, सम्पर्क–कार्य, कम्प्यूटर, अन्तरिक्ष अनुसन्धान, व्यापार आदि का चयन कर सकते हैं। सूती कपड़ा, रत्न, दवा, चमड़ा, एण्टी–बायोटिक दवा, प्लास्टिक, रबड़ आदि का व्यापार लाभप्रद हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों की आय में वृद्धि, सम्मान, वरिष्ठ कर्मचारियों के अनुग्रह तथा वांछित लक्ष्य की प्राप्ति होगी। व्यवसाय–व्यापार से जुड़े लोगों को साझेदारों से लाभ, व्यापार में सफलता, विदेश यात्रा, आय में वृद्धि और उपार्जन होगा। जीविका में प्राप्ति के लिए यह दशा उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जमीन–जायदाद :

इस दशा के दौरान आपको सभी भौतिक समृद्धि मिलेगी और सुखों में वृद्धि होगी। आप अपना आवास परिवर्तित कर सकते हैं। इस दशा में आपको चल सम्पत्ति, जमीन–जायदाद की प्राप्ति हो सकती है। बुध की अन्तर्दशा में आपकी छोटी व दूर की यात्रा होगी। छोटी यात्रा में सम्भावित नुकसान से बचने के लिए सावधानी बरतनी चाहिए।

शिक्षा :

आपकी बुनियादी शिक्षा उत्तम होगी। उच्च शिक्षा के लिए आप अपनी संस्था में परिवर्तन कर सकते हैं। लक्ष्य की प्राप्ति के लिए आप कठिन परिश्रम करेंगे। दशा की प्रगति के साथ स्थिति में सुधार आएगा। विज्ञान, कला, कम्प्यूटर–विज्ञान, व्यापार आदि में आपकी रुचि हो

सकती है। आपकी इच्छा शक्ति मजबूत है, आप स्वभाव से स्वतंत्र हैं और अपनी शिक्षा में अच्छा करेंगे।

परिवार :

आपके बच्चों के जीवन में कुछ परिवर्तन होगा और उन्हें आपकी सहायता तथा मार्गदर्शन की आवश्यकता हो सकती है। आपका आपके जीवनसाथी के साथ संबंध सन्तोषजनक रहेगा। आपकी माता की सम्पत्ति में वृद्धि होगी, आर्थिक–समृद्धि की प्राप्ति होगी और उन्हें स्वास्थ्य के प्रति सावधानी बरतनी होगी। आपके पिता की यात्रा, अचानक लाभ की प्राप्ति तथा आध्यात्मिक विकास होगा। आपके छोटे भाई–बहनों को अचानक धन–लाभ और जीवन का सुख मिलेगा जबकि बड़े भाई–बहनों को प्रतिद्वंद्वियों पर विजय और भौतिक समृद्धि की प्राप्ति होगी।

अन्तर्दशा :

राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के कारण आपको सुख, अचल सम्पत्ति की प्राप्ति तथा लाभ मिलेगा। गुरु की अन्तर्दशा भाग्यशाली सिद्ध होगी यद्यपि प्रतिद्वन्द्वियों के कारण कुछ समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। शनि की अन्तर्दशा कष्टकारक सिद्ध हो सकती है किन्तु, भौतिक कला व यात्रा का अवसर प्रदान करेगी। बुध की अन्तर्दशा छोटे भाई–बहनों के लिए सहायक होगी और इसके फलस्वरूप उनको यात्रा और व्यय होगा। केतु की अन्तर्दशा में कुछ समस्याएं हो सकती हैं। शुक्र की अन्तर दशा के फलस्रूप लाभ और सम्पत्ति में वृद्धि होगी जबकि सूर्य की अन्तर्दशा के कारण पारिवारिक सुख मिलेगा और सम्पत्ति में वृद्धि होगी। चन्द्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और सम्पत्ति तथा सुख की प्राप्ति होगी जबकि योगकारक मंगल के कारण सुख की प्राप्ति, बच्चे का जन्म और जीविका में प्रगति होगी।

अंर्तदशा :– राहु – शुक्र
(01/01/2000 - 20/04/2000)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 01/01/2000 को प्रारंभ होकर 02/10/2003 को समाप्त होगी। इस महादशा में शुक्र अंतर्दशा की अवधि 3 वर्ष होगी जो आपके लिए 01/01/2000 को प्रारंभ होकर 20/04/2000 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्री में अष्टम भाव में स्थित है। अष्टम भाव आयु, विरासत, दुर्घटना, दुर्भाग्य, दुख, चिंता, निराशा, हानि, बाधा, चोरी और डकैती का प्रतिनिधि है। शुक्र शुभ ग्रह है। अष्टम भाव में स्थित होकर शुक्र आपकी कुंडली के द्वितीय भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप धनी बनेंगे; सब सुख–साधन उपलब्ध रहेंगे। भावनात्मक रूप से विचलित रह सकते हैं। छोटी–छोटी बातों पर दुखी हो सकते हैं। इस संबंध में सकारात्मक प्रयास करना श्रेयस्कर रहेगा।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए शुक्र वैदिक मंत्र के 16000 जाप करें।

अंर्तदशा :– राहु – सूर्य
(20/04/2000 - 14/03/2001)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 01/01/2000 को प्रारंभ होकर 02/10/2003 को समाप्त होगी। इस महादशा में सूर्य की अंतर्दशा 10 मास 24 दिन की होगी जो आपके लिए 20/04/2000 को प्रारंभ होकर 14/03/2001 को समाप्त होगी।

सूर्य आपकी जन्मपत्री में नवम भाव में स्थित है। नवम भाव श्रद्धा, भाग्य, धार्मिक और आध्यात्मिक विचार, अंतर्ज्ञान, भविष्यज्ञान, उपासनास्थल, पिता, धर्मगुरु, लंबी यात्राएं, हवाई यात्रा, उच्च शिक्षा और घुटनों का प्रतिनिधि है। सूर्य शक्तिशाली ग्रह है। नवम भाव में स्थित होकर सूर्य आपकी कुंडली के तृतीय भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप पिता और गुरु के आज्ञाकारी होंगे। धर्म और अध्यात्म में आस्था होगी। पुत्र सुखकारी होंगे। अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए प्रत्येक दिन सूर्य गायत्री मंत्र का जाप करें और सूर्य तांत्रिक मंत्र के कुल 28000 जाप करें।

अंर्तदशा :– राहु – चन्द्र
(14/03/2001 - 13/09/2002)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 01/01/2000 को प्रारंभ होकर 02/10/2003 को समाप्त होगी। इस महादशा में चंद्रमा की अंतर्दशा 1 वर्ष 6 मास की होगी जो आपके लिए 14/03/2001 को प्रारंभ होकर 13/09/2002 को समाप्त होगी।

चंद्रमा आपकी जन्मपत्री में सप्तम भाव में स्थित है। सप्तम भाव लौकिक संबंध, जीवनसाथी, व्यापार में साझेदार, मुकदमे, विदेश में प्रभाव और जीवन को खतरों का परिचायक है। चंद्रमा मन का कारक है। सप्तम भाव में स्थित होकर चंद्रमा आपकी कुंडली के लग्न पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपके व्यक्तित्व में निखार आएगा। समाज में लोकप्रिय बनेंगे। विवाहित जीवन सुखी रहेगा; उससे लाभ भी हो सकता है। इसी प्रकार से साझेदारी के कार्य में लाभ हो सकता है। आपके जीवनसाथी के सौंदर्य में निखार आ सकता है। कार्यों में कुछ बाधाएं आ सकती हैं या राहु महादशा के कारण निराशा महसूस कर सकते हैं।

शुभत्व में वृद्धि के लिए चंद्रमा के वैदिक मंत्र के 11000 जाप करें।

अंर्तदशा :– राहु – मंगल
(13/09/2002 - 02/10/2003)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है जो आपके लिए 01/01/2000 को प्रारंभ होकर 02/10/2003 को समाप्त होगी। इस महादशा में मंगल की अंतर्दशा 1 वर्ष 18 दिन की होगी जो आपके लिए 13/09/2002 को प्रारंभ होकर 02/10/2003 को समाप्त होगी।

मंगल आपकी जन्मपत्री में एकादश भाव में स्थित है। एकादश भाव मित्रगण, समाज, महत्वाकांक्षा, इच्छाएं और उनकी पूर्ति, उद्यम में सफलता, धनलाभ, बड़े भाई, भाग्योदय और टखनों का परिचायक है। एकादश भाव में स्थित होकर मंगल आपकी कुंडली के 2, 5, 6 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपकी वाणी कटु हो सकती है मगर प्रभावशाली वक्ता होंगे। अभिमान अधिक हो सकता है। अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं, धनी बनेंगे। साहसी होंगे, दबदबा बढ़ेगा। धन कमाने के लिए गैरकानूनी कार्य कर सकते हैं, लालची हो सकते हैं।

अरिष्ट से बचाव के लिए 6 रत्ती का लाल मूंगा सोने या तांबे में जड़वाकर, कच्चे दूध से धोकर, मंगल यंत्र से 11 बार छूकर, मंगलवार को प्रातःकाल हनुमान या गणेशजी या शिवजी की पूजा के बाद धारण करें।

महादशा :– गुरु
(02/10/2003 - 02/10/2019)

गुरु की महादशा की अवधि सोलह वर्ष है। आपकी कुण्डली में यह 02/10/2003 को आरम्भ और 02/10/2019 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में गुरु लग्न में स्थित है। यह शरीर रचना, रूपकार, स्वास्थ्य, स्वभाव, प्रवृत्ति, प्रतिष्ठा, सामान्य रहन–सहन, चेहरे के ऊपरी भाग, दीर्घ आयु और सामान्य जीवन की संरचना के प्रति विचार का द्योतक है। गुरु स्वभाव से एक शुभ ग्रह है जो आपकी जन्मकुण्डली में प्रथम भाव में स्थित होकर पंचम, सप्तम तथा नवम भावों को देखता हुआ उनपर अपना शुभ प्रभाव डाल रहा है। सोलह वर्ष की यह दशा शान्ति, समृद्धि और उत्तम स्वास्थ्य की दशा होगी।

स्वास्थ्य :

महादशा का स्वामी अपने ही भाव में स्थित होकर भाव को शक्ति दे रहा है। फलतः इस दशा के दौरान आपको कोई बड़ी स्वास्थ्य समस्या नहीं होगी और आप अपने सामान्य कार्यों का सम्पादन करने की स्थिति में होंगे।

अर्थ–सम्पत्ति :

गुरु की प्रथम भाव में स्थिति और पंचम तथा नवम (सप्तम के अतिरिक्त) भाव अर्थात् दो त्रिकोणों पर उसकी दृष्टि के कारण इस दशा के दौरान आप भाग्यशाली होंगे। आप अपनी आय के स्रोतों और चल–अचल सम्पत्ति में वृद्धि करेंगे। आप भोग–विलास की वस्तुओं पर व्यय भी करेंगे।

व्यवसाय :

प्रथम भाव में स्थित गुरु के कारण आप अपने ही प्रयास से अपना जीविकोपार्जन करेंगे। आप जिस किसी भी व्यवसाय में हों, उन्नति करेंगे। आप नौकरीपेशा हों अथवा व्यवसायी, जीवन में उन्नति करेंगे और मकान, वाहन आदि सम्पत्ति में वृद्धि करेंगे। आपकी शिक्षा तथा ज्ञान में भी वृद्धि होगी।

पारिवारिक जीवन :

गुरु की प्रथम भाव में स्थिति तथा पंचम, सप्तम तथा नवम भावों अर्थात् भूत–कर्म भाव, जीवन संगी भाव और सुख कर्म पर उसकी दृष्टि के कारण आपका पारिवारिक जीवन अत्यन्त सुव्यवस्थित तथा सौहर्दपूर्ण होगा। आपके जीवनसाथी आपके सहयोगी और आपके बच्चे आज्ञाकारी होंगे और आपके माता–पिता आपके जीवन को सुखमय बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

ज्ञान के प्रति आपकी खोज के कारण आप अपनी इच्छा के अनुरूप साहित्य और धर्म की पुस्तकों का अध्ययन करेंगे।

अंर्तदशा :– गुरु – गुरु
(02/10/2003 - 19/11/2005)

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 02/10/2003 को प्रारंभ हो रही है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा बृहस्पति की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 1 मास 18 दिन रहेगी। आपके लिए यह 02/10/2003 को प्रारंभ होकर 19/11/2005 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति बुद्धि, उच्चज्ञान, जीवन और धन का कारक है।

इस अवधि में आप सौभाग्यशाली रहेंगे, सम्मानित होंगे, धनी बनेंगे। कार्यों में सफलता मिलेगी। आत्म–विश्वास में वृद्धि होगी; योग्यता विकसित होगी। पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा, संतान सुखकारी होगी। अगर अविवाहित हैं तो विवाह हो सकता है। व्यापार से लाभ में वृद्धि होगी। चुनाव में जीत होगी; हर काम में सफल रहेंगे। पुत्र का जन्म हो सकता है। घर में मांगलिक उत्सव हो सकता है। पिता से संबंध उत्तम रहेंगे। विद्वानों, संतों से संपर्क बढ़ेगा।

आपके जीवनसाथी को व्यापार में लाभ होगा, उच्चपद प्राप्त होगा, धनी बनेंगे। आपके पिता को निवेश से लाभ हो सकता है। माता की किस्मत चमकेगी; आपके भाई–बहनों के लिए परीक्षा में सफलता, संचार माध्यम में कुशलता, लघु यात्राओं का संकेत है।

आपकी संतान को परीक्षा में सफलता मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो यात्राएं होंगी, धनी बनेंगे, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो कुछ परिवर्तन हो सकता है; अप्रत्याशित प्रगति या धनलाभ संभव है। परामर्शदाता धनी बनेंगे; अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं। व्यापारियों को निवेश से लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए बृहस्पति के मंत्र का जाप करें।

ऊँ बृं वृहस्पतये नमः

अंर्तदशा :– गुरु – शनि
(19/11/2005 - 01/06/2008)

आपकी बृहस्पति की महादशा 02/10/2003 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में दूसरी अंतर्दशा शनि की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 6 मास 12 दिन रहेगी। आपके लिए यह 19/11/2005 को प्रारंभ होकर 01/06/2008 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु, संन्यास और दार्शनिक स्वभाव का कारक है।

इस अवधि में आपके कार्यों में बाधाएं आएंगी, मगर आप उन्हें पार करने में कामयाब होंगे। धैर्य का प्रयोग श्रेयस्कर रहेगा। विवेक और दृढ़निश्चय से युक्त रहेंगे। विवाह हो सकता है। व्यपार में लाभ, विदेश यात्रा, प्रोन्नति और प्रसिद्धि की संभावना है। छोटे भाई–बहनों से सुख

मिलेगा। उत्साह से परिपूर्ण रहेंगे।

आपके जीवनसाथी धनी बनेंगे, उनकी यात्राएं होंगी, व्यापार में लाभ होगा, जीवनस्तर सुधरेगा। आपके पिता को संतान से सुख मिलेगा; निवेश से लाभ होगा। माता के सम्मान में वृद्धि होगी। आपके भाई–बहनों के लिए अचानक धनलाभ या अचल संपत्ति की प्राप्ति, कर्मचारियों से सहयोग का संकेत है।

आपकी संतान को स्पर्धियों पर विजय मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो प्रसिद्ध होंगे, आय अच्छी होगी, यात्राएं होंगी।

अगर आप परामर्शदाता हैं तो अचल संपत्ति क्रय करेंगे। व्यापारियों का लाभ बढ़ेगा।

स्वास्थ्य का ध्यान रखें। आलस्य से दूर रहें। मामूली बीमारियों का तुरंत इलाज करवाएं।

अरिष्ट से बचाव के लिए भोजन से पूर्व गाय को रोटी दें।

अंर्तदशा :– गुरु – बुध
(01/06/2008 - 07/09/2010)

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 02/10/2003 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में तृतीय अंतर्दशा बुध की होगी, जिसकी अवधि 2 वर्ष 3 मास 6 दिन होगी। आपके लिए यह 01/06/2008 को प्रारंभ होकर 07/09/2010 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध बुद्धि, स्मृति और हाज़िरजवाबी का कारक है।

इस अवधि में आपकी ज्ञान–विज्ञान में रुचि होगी। लेखन, प्रकाशन, अध्यापन के लिए समय उत्तम है। उच्च शिक्षा के लिए प्रवेश मिल सकता है। शिक्षा से संबंधित यात्रा हो सकती है। पिता से संबंध उत्तम रहेंगे। विज्ञान, गणित और ज्योतिष में महारत हासिल कर सकते हैं। धर्मशास्त्रों का अध्ययन कर सकते हैं। महत्वपूर्ण फैसले कर सकते हैं। उत्तम प्रशासनिक क्षमता और बुद्धिमानी के कारण धनार्जन उत्तम होगा। आपके जीवनसाथी की लघु यात्राएं होंगीः उपयुक्त नियोजन और साधनों के सुप्रबंधन द्वारा धनलाभ होगा। आपके पिता को परिश्रम से लाभ होगा। माता को मानसिक और घरेलू सुख मिलेगा। आपके भाई–बहनों के लिए विवाह, व्यापार से लाभ या उसका विस्तार, शिशु का जन्म, उत्तम मित्र और विशिष्ट उपलब्धियों का संकेत है।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो निवेश और शेयरों से लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो सहकर्मी सहयोग करेंगे, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे, धनलाभ होगा। परामर्शदाताओं के खर्चे बढ़ सकते हैं, यात्राएं होंगी। व्यापारियों को विचार–विनिमय और जनसंपर्क से लाभ होगा।

द्य ण ण ण

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। गठिया आदि की मामूली शिकायत हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए दुर्गाजी की उपासना करें।

अंर्तदशा :– गुरु – केतु
(07/09/2010 - 14/08/2011)

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 02/10/2003 प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में चौथी अंतर्दशा केतु की होगी जिसकी अवधि 11 मास 6 दिन होगी। आपके लिए यह 07/09/2010 को प्रारंभ होकर 14/08/2011 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु मोक्ष और शल्य चिकित्सा का कारक है।

इस अवधि में आप सफल और प्रसन्न होंगे। समाज और कार्यक्षेत्र में प्रगति होगी। माता–पिता और आयु में बड़े लोगों से लाभ होगा। सामाजिक कार्यों में रुचि लेंगे जिससे सम्मान मिलेगा।

माता से संबंध मधुर रहेंगे। अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं। बहुत से मित्र होंगे जो सहायता करेंगे। माता के माध्यम से लाभ हो सकता है। अचल संपत्ति से आय में वृद्धि हो सकती है।

आपके जीवनसाथी सुखसाधनसंपन्न होंगे। आपके पिता की आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। माता को साझेदारी से लाभ होगा, यात्राएं होंगी। आपके भाई–बहनों के लिए अप्रत्याशित लाभ, अचानक घटना, परिवर्तन, यात्रा और अधिक खर्च का संकेत है।

आपकी संतान को स्पर्धियों पर विजय मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो सहकर्मियों से मधुर संबंध होंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो भाग्यशाली रहेंगे। परामर्शदाताओं की आय अच्छी होगी। व्यापारी निवेश कर सकते हैं।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। कोई मामूली व्याधि हो सकती है। अरिष्ट से बचाव के लिए उड़द, कंबल, सतनजा और तिल दान करें।

अंर्तदशा :– गुरु – शुक्र
(14/08/2011 - 14/04/2014)

आपके लिए बृहस्पति महादशा 02/10/2003 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में पांचवी अंतर्दशा शुक्र की होगी, जिसकी अवधि 2 वर्ष 8 मास रहेगी। आपके लिए यह 14/08/2011 को प्रारंभ होकर 14/04/2014 के समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शुक्र सौंदर्य, सुख और कला का कारक है।

इस अवधि में आपका विवाहित जीवन सुखी रहेगा; समृद्ध बनेंगे। अचल संपत्ति प्राप्त

कर सकते हैं, अचानक अप्रत्याशित लाभ हो सकता है। प्रसन्नचित्त रहेंगे। सब सुख–साधन उपलब्ध रहेंगे। आपके जीवनसाथी तंत्र–मंत्र में रुचि ले सकते हैं। आप दान–धर्म और समाजसेवा में रुचि ले सकते हैं। सुंदर वस्तुएं क्रय कर सकते हैं। बहुमुखी प्रगति का योग है।

आपके जीवनसाथी को विभिन्न माध्यमों से धनार्जन होगा। आपके पिता के खर्चे बढ़ सकते हैं मगर धन संचित भी होगा। माता खुश रहेंगी, धनी बनेंगी, पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा। आपके भाई–बहनों के लिए शत्रुओं पर विजय, उत्तम स्वास्थ्य, प्रसिद्धि, सुख–साधन, अच्छी आय और उत्तम मित्रों का संकेत हैं।

आपकी संतान प्रसन्न और संतुष्ट रहेगी, शिक्षा उत्तम होगी, धनी बनेंगे, परिवार से उत्तम संबंध होंगे। अगर वे कार्यरत हैं तो अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं।

अगर आप सेवारत हैं तो यात्रा होगी, सफल रहेंगे, आय में वृद्धि हो सकती है। परामर्शदाताओं की आय में वृद्धि होगी। व्यापारियों को विभिन्न माध्यमों से धनागम होगा; आय बढ़ेगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। पाचन और उत्सर्जन तंत्र की व्याधियों से बचाव करें। शुभत्व में वृद्धि के लिए शुक्र मंत्र का जाप करें।

अंर्तदशा :– गुरु – सूर्य
(14/04/2014 - 31/01/2015)

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 02/10/2003 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में छठी अंतर्दशा सूर्य की होगी जिसकी अवधि 9 मास 18 दिन रहेगी। आपके लिए यह 14/04/2014 को प्रारंभ होकर 31/01/2015 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य आत्मा, पिता, कार्यक्षमता और स्वास्थ्य का कारक है।

इस अवधि में आपके पिता से संबंध उत्तम रहेंगे। अपने से बड़े लोग और सहकर्मी प्रशंसा करेंगे। उच्च शिक्षा के लिए प्रवेश मिल सकता है। भाग्य में वृद्धि होगी। दर्शनशास्त्र और भौतिक विज्ञान का अध्ययन कर सकते हैं। साहित्य और संचार माध्यम में सफल हो सकते हैं। बहुत सारे काम पूर्ण होंगे। कार्यक्षमता उत्तम होगी।

आपके जीवनसाथी की कार्यक्षमता उत्तम होगी, सुख–साधन उपलब्ध होंगे। आपके पिता सफल होंगे और प्रगति करेंगे। माता की विरोधियों पर विजय होगी, स्वास्थ्य उत्तम होगा। आपके भाई–बहनों के लिए साझेदारी के व्यापार से लाभ, धनागम, सफलता, सरकार से लाभ का संकेत है।

आपकी संतान शिक्षा में सफल रहेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो धनार्जन उत्तम होगा, स्वास्थ्य अच्छा रहेगा, उच्चपद मिल सकता है।

अगर आप सेवारत हैं तो मामूली परिवर्तन हो सकता है। परामर्शदाताओं की यात्रा

हो सकती है। व्यापारी धन कमाएंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। अरिष्ट से बचाव के लिए तांबा, गेहूं और लाल वस्त्र दान में दें।

अंर्तदशा :– गुरु – चन्द्र
(31/01/2015 - 01/06/2016)

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 02/10/2003 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा चंद्रमा की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 4 मास है। आपके लिए यह 31/01/2015 को आरंभ होकर 01/06/2016 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र सुंदरता, स्वास्थ्य, मानसिक स्वास्थ्य और भावनाओं का कारक है।

इस अवधि में आप कार्यक्षेत्र में सफल रहेंगे। व्यापार में लाभ होगा। यात्राएं हो सकती हैं। विवाहित जीवन सुखी रहेगा। सब सुख–साधन उपलब्ध रहेंगे। अत्यधिक भावुकता और खिन्नता से बचें। व्यक्तित्व प्रभावशाली रहेगा। परिवार का पालन उत्तम करेंगे; माता से मधुर संबंध रहेंगे। बहुत से मित्र होंगे। लोकप्रियता बढ़ेगी।

आपके जीवनसाथी का भाग्य उत्तम होगा, प्रसिद्ध होंगे। आपके पिता धनी बनेंगे, बहुत से मित्र होंगे, संतान से सुख मिलेगा। माता का जीवन सुखमय होगा। आपके भाई–बहनों के लिए सुखी पारिवारिक जीवन का संकेत है।

आपकी संतान शिक्षा में सफल रहेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो सफल रहेंगे; समय का सदुपयोग करेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो हर प्रकार से लाभ होगा। परामर्शदाताओं का धनार्जन उत्तम होगा, सफल रहेंगे। व्यापारी खूब धन कमाएंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। श्वसन तंत्र के रोगों से बचाव करें। अरिष्ट से बचाव के लिए चावल, सफेद वस्त्र, मिश्री और सफेद चंदन का दान करें।

अंर्तदशा :– गुरु – मंगल
(01/06/2016 - 08/05/2017)

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 02/10/2003 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में आठवीं अंतर्दशा मंगल की होगी जिसकी अवधि 11 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 01/06/2016 को प्रारंभ होकर वद 08/05/2017 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल साहस, शौर्य और आत्मविश्वास का कारक है।

इस अवधि में आप धनी और सफल होंगे। प्रभाव में वृद्धि होगी। बहुत से प्रभावशाली मित्र होंगे। लक्ष्य की ओर उन्मुख रहेंगे। कार्यों की प्रशंसा होगी। निवेश से लाभ होगा।

साहस और उत्साह में वृद्धि होगी; परीक्षा में सफलता मिलेगी। शिशु का जन्म हो सकता है। शिक्षा, विशेषकर तकनीकी क्षेत्र की, उत्तम रहेगी। शत्रुओं पर विजय मिलेगी। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, मातहत सहयोग करेंगे।

आपके जीवनसाथी को निवेश और व्यापार में लाभ होगा। आपके पिता को उच्चपद प्राप्त हो सकता है। माता को जीवन में नया वातावरण आएगा। आपके भाई–बहनों के लिए ज्ञान–विज्ञान से संबंधित सर्जनात्मक कार्य, साहस और खुशी का संकेत है।

आपकी संतान को वांछित कार्यों में सफलता मिलेगी; सामूहिक कार्यों से खुशी मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो निवेश से लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय उत्तम होगा, स्पर्धा में सफल होंगे। परामर्शदाताओं की आय अच्छी होगी। व्यापारी सौभाग्यशाली रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए तंदूर में बनी मीठी रोटी बांटे।

अंर्तदशा :– गुरु – राहु
(08/05/2017 - 02/10/2019)

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 02/10/2003 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में नवीं अंतर्दशा राहु की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 4 मास 24 दिन है। यह 08/05/2017 को प्रारंभ होकर 02/10/2019 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक सुख, अचानक परिवर्तन और विदेशियों का कारक है।

इस अवधि में आप जायदाद या वाहन खरीद सकते हैं। घरेलू सुख उत्तम होगा। आप बली और निडर होंगे। ज्ञानार्जन उत्तम होगा; प्रसिद्ध बनेंगे। विभिन्न धर्मों के लोगों से लाभ होगा। तीर्थयात्रा हो सकती है। समाज, कार्यक्षेत्र और व्यवसाय से लाभ होगा। उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। प्रसिद्धि मिलेगी। धर्म और अध्यात्म में रुचि होगी। दान–धर्म में मन लगेगा।

आपके जीवनसाथी कार्यक्षेत्र में तरक्की करेंगे। आपके पिता को अप्रत्याशित लाभ होगा। माता का धनार्जन उत्तम होगा। आपके भाई–बहनों के लिए धन, उत्तम शिक्षा, इच्छाओं की पूर्ति, सम्मान का संकेत है।

आपकी संतान को वांछित परिणाम के लिए परिश्रम करना होगा। अगर वे कार्यरत हैं तो यात्राएं हो सकती हैं।

अगर आप सेवारत हैं तो समृद्धि बढ़ेगी आय अच्छी होगी, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं को साझेदारी से लाभ होगा। व्यापारियों का लाभ बढ़ेगा; व्यस्त रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। छाती की मामूली शिकायतों को अनदेखा न करें। अरिष्ट से बचाव के लिए राहु मंत्र का जाप करें।

ॐ रां राहवे नमः

महादशा :– शनि
(02/10/2019 - 01/10/2038)

शनि की महादशा की अवधि 19 वर्ष है। आपकी कुण्डली में यह 02/10/2019 को आरम्भ और 01/10/2038 को समाप्त होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में शनि प्रथम भाव में स्थित है। यह एक अशुभ ग्रह है जो जातक के दिमाग में भय उत्पन्न करता है। लक्ष्य प्राप्ति में यह बाधा और विलम्ब करता है। यह जातक की परीक्षा लेता है और लक्ष्य की प्राप्ति के लिए उसे कठिन परिश्रम करने को प्रेरित कर उसके धैर्य की परीक्षा लेता है। किन्तु जातक को अन्ततः लक्ष्य की प्राप्ति होती है।

जन्मकुण्डली में प्रथम भाव में स्थित इस ग्रह की दृष्टि तृतीय, सप्तम तथा दशम भाव पर है और यह इन भावों के 'कारकत्व' पर प्रभाव डाल रहा है। प्रथम भाव, जिसमें यह स्थित है, शरीर की लम्बाई, बनावट, स्वास्थ्य, जीवन–शक्ति, व्यक्तित्व, जीवन संघर्ष, प्रतिष्ठा, सामान्य तन्दुरुस्ती, और जीवन–संरचना के प्रति विचार का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी शनि लग्न में स्थित होने के फलस्वरूप इस दशा के दौरान कोई गम्भीर बीमारी या दुर्घटना नहीं होगी। इस दशा में आपका स्वास्थ्य सामान्य रहेगा और आप अपना कार्य नियमित रूप से करेंगे।

अर्थ–सम्पत्ति :

इस दशा के दौरान शनि के कारण आपको अर्थ–सम्पत्ति में वृद्धि करने के अनेक अवसर प्राप्त होंगे। आपको धन अर्जन के अनेक अवसर मिलेंगे और इस दशा में आपके संसाधनों में वृद्धि और 'सुधार' होगा। आप आराम और विलास की वस्तुओं पर व्यय करने में सक्षम होंगे।

व्यवसाय :

व्यावसायिक स्तर पर आप सुदृढ़ होंगे और अपनी बुद्धिमत्ता तथा शिक्षा के बल पर स्वयं धनोपार्जन करेंगे। आपमे स्वनियोजित होने की संभावना है। आप उपदेशक या नेता भी हो सकते हैं। आपको पैतृक सम्पत्ति भी मिल सकती है।

पारिवारिक जीवन :

प्रथम भाव से सप्तम भाव पर शनि की दृष्टि के फलस्वरूप आपको आपके जीवनसाभी से सहयोग मिलेगा और वह आपके परिवार को सुचारु रूप से चलाने में आपकी सहायता करेंगे। आपके बच्चे आज्ञाकारी तथा सहयोगी होंगे और आपके दैनिक जीवन में आपका सहयोग करेंगे। आपको उनसे संतोष मिलेगा।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

शिक्षा और साहित्यिक वृत्ति में वृद्धि की दृष्टि से यह दशा आपके अनुकूल होगी।

अंर्तदशा :– शनि – शनि
(02/10/2019 - 04/10/2022)

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है। आपके लिए यह 02/10/2019 को प्रारंभ होकर 01/10/2038 को समाप्त होगी। इस महादशा में शनि की अंतर्दशा 3 वर्ष 3 मास की होगी जो आपके लिए 02/10/2019 को प्रारंभ होकर 04/10/2022 को समाप्त होगी।

शनि आपकी जन्मपत्री में लग्न में स्थित है। लग्न शारीरिक बनावट, आकृति, स्वास्थ्य, जन्मजात स्वभाव और आदतें, सम्मान, गरिमा, सामान्य शुभत्व, चेहरे का ऊपरी भाग, आयु और जीवन की रुपरेखा आदि का परिचायक है। लग्न में स्थित होकर शनि आपकी कुंडली के 3, 7, 10 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपके स्वास्थ्य और सामाजिक स्थिति में गिरावट आ सकती है। वातरोगों से बचाव करना श्रेयस्कर रहेगा। अधिकारीगण अप्रसन्न रह सकते हैं। आलस्य की भावना अधिक हो सकती है; ज़िम्मेदारियों से बचने की कोशिश कर सकते हैं। कार्यों में प्रगति धीमी रहेगी।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए निम्न उपाय करें:

- मछलियों को आटे की गोलियां खिलाएं।
- शिवजी की उपासना करें।
- भोजन की पहली चपाती गाय को दें।

अंर्तदशा :– शनि – बुध
(04/10/2022 - 14/06/2025)

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है जो आपके लिए 02/10/2019 को प्रारंभ होकर 01/10/2038 को समाप्त होगी। इस महादशा में बुध की अंतर्दशा 2 वर्ष 8 मास 9 दिन की होगी जो आपके लिए 04/10/2022 को प्रारंभ होकर 14/06/2025 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्री में नवम भाव में स्थित है। नवम भाव श्रद्धा, भाग्य, धार्मिक और आध्यात्मिक विचार, अंतर्ज्ञान, भविष्यज्ञान, उपासनास्थल, पिता, धर्मगुरु, लंबी यात्राएं, हवाई यात्रा, उच्च शिक्षा और घुटनों का प्रतिनिधि है। बुध ज्ञान और बुद्धि का कारक है। नवम भाव में स्थित होकर बुध आपकी कुंडली के तृतीय भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप विद्वान बनेंगे; विदेश में भी व्याख्यान दे सकते हैं। वैज्ञानिक दृष्टिकोण और ज्ञान के कारण धनी बनेंगे। पिता और अन्य परिवारजनों से संबंध मधुर होंगे।

शुभत्व में वृद्धि के लिए बुध के तांत्रिक मंत्र के 36000 जाप करें।

अंर्तदशा :– शनि – केतु
(14/06/2025 - 23/07/2026)

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है। आपके लिए यह 02/10/2019 को प्रारंभ होकर 01/10/2038 को समाप्त होगी। इस महादशा में केतु की अंतर्दशा 1 वर्ष 1 मास 9 दिन की होगी जो आपके लिए 14/06/2025 को प्रारंभ होकर 23/07/2026 को समाप्त होगी।

केतु आपकी जन्मपत्रिका में दशम भाव में स्थित है। दशम भाव सम्मान, जनता, सत्ता, सफलता, पद और साख, दुनियादारी, प्रोन्नति, नियुक्ति, धार्मिक कार्य, सरकार से सम्मान और जांघों का परिचायक है। दशम भाव में स्थित होकर केतु आपकी कुंडली के चतुर्थ भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपके कार्यों में बाधाएं आ सकती हैं, फिर भी आप साहसी और प्रसन्न रहेंगे। धर्म में रुचि होगी, तीर्थों की यात्राएं करेंगे। गरीबों की मदद करेंगे।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए केतु के तांत्रिक मंत्र के 72000 जाप करें।

अंर्तदशा :– शनि – शुक्र
(23/07/2026 - 22/09/2029)

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है। आपके लिए यह 02/10/2019 को प्रारंभ होकर 01/10/2038 को समाप्त होगी। इस महादशा में शुक्र की अंतर्दशा 3 वर्ष 2 मास की होगी जो आपके लिए 23/07/2026 को प्रारंभ होकर 22/09/2029 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्री में अष्टम भाव में स्थित है। अष्टम भाव आयु, विरासत, दुर्घटना, दुर्भाग्य, दुख, चिंता, निराशा, हानि, बाधा, चोरी और डकैती का प्रतिनिधि है। शुक्र शुभ ग्रह है। अष्टम भाव में स्थित होकर शुक्र आपकी कुंडली के द्वितीय भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपको जीवन की सभी उत्तम वस्तुएं, सुख–साधन और मनोरंजन उपलब्ध होंगे। फिर भी, भावनात्मक स्थायित्व में कुछ कमी आ सकती है, मन विचलित हो सकता है।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए शुक्र के वैदिक मंत्र के 16000 जाप करें।

अंर्तदशा :– शनि – सूर्य
(22/09/2029 - 04/09/2030)

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है। आपके लिए यह 02/10/2019 को प्रारंभ होकर 01/10/2038 को समाप्त होगी।

शनि महादशा में सूर्य की अंतर्दशा 11 मास 12 दिन की होती है। आपके लिए यह 22/09/2029 को प्रारंभ होकर 04/09/2030 को समाप्त होगी।

सूर्य आपकी जन्मपत्री में नवम भाव में स्थित है। नवम भाव श्रद्धा, भाग्य, धार्मिक और आध्यात्मिक विचार, अंतर्ज्ञान, भविष्यज्ञान, उपासनास्थल, पिता, धर्मगुरु, लंबी यात्राएं, हवाई यात्रा, उच्च शिक्षा और घुटनों का प्रतिनिधि है। सूर्य शक्तिशाली ग्रह है। नवम भाव में स्थित होकर सूर्य आपकी कुंडली के तीसरे भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपको पुत्रों से सुख में कमी आ सकती है। स्वयं के प्रयास से अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं। धर्म और अध्यात्म में रुचि होगी,

पिता और गुरु की सेवा करेंगे। पैतृक संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं। आप महत्वाकांक्षी और उद्यमी होंगे, मगर कार्यों में बाधाएं आएंगी।

अरिष्ट से बचाव के लिए सूर्य के वैदिक मंत्र के 7000 जाप करें। सूर्योदय के समय सूर्य नमस्कार करते हुए सूर्य को जल अर्पित करें।

अंर्तदशा :– शनि – चन्द्र
(04/09/2030 - 04/04/2032)

शनि महादशा में चंद्र की अंतर्दशा 1 वर्ष 7 मास की होगी। आपके लिए यह 02/10/2019 को प्रारंभ होकर 01/10/2038 को समाप्त होगी।

चंद्रमा आपकी जन्मपत्री में सप्तम भाव में स्थित है। सप्तम भाव आत्मीय संबंध, जीवनसाथी, व्यापार में साझेदार, मुकदमे, विदेश में प्रभाव और जीवन में को खतरों का परिचायक है। सप्तम भाव में स्थित होकर चंद्र आपकी कुंडली के लग्न पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपके व्यक्तित्व में निखार आएगा। रोजमर्रा की गतिविधियों में संवेदनशील और मूडी हो सकते हैं। उत्तम व्यक्तित्व के कारण समाज में लोकप्रिय बनेंगे। अगर अविवाहित हैं तो विवाह हो सकता है। साझेदारी के व्यापार में लाभ होगा, मगर कुछ बाधाएं आएंगी। विवाहित जीवन सुखी रहेगा।

अरिष्ट से बचाव के लिए चंद्रमा के वैदिक मंत्र के 11000 जाप करें।

अंर्तदशा :– शनि – मंगल
(04/04/2032 - 14/05/2033)

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है जो आपके लिए 02/10/2019 को प्रारंभ होकर 01/10/2038 को समाप्त होगी। इस महादशा में मंगल की अंतर्दशा 1 वर्ष 1 मास की होगी जो आपके लिए 04/04/2032 को प्रारंभ होकर 14/05/2033 को समाप्त होगी।

मंगल आपकी जन्मपत्री में एकादश भाव में स्थित है। एकादश भाव मित्रगण, समाज, महत्वाकांक्षा, इच्छाएं और उनकी पूर्ति, उद्यम में सफलता, धनलाभ, बड़े भाई, भाग्योदय और टखनों का परिचायक है। मंगल अग्निप्रधान ग्रह है और ऊर्जा, भूसंपत्ति का कारक है। एकादश भाव में स्थित होकर मंगल आपकी कुंडली के 2, 5, 6 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपके कार्य में बाधाएं आएंगी। फिर भी आप धनी बनेंगे, अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं। साहसी होंगे, समाज में प्रभाव रहेगा। उच्चवर्ग से संपर्क के कारण अभिमानी बन सकते हैं। धन की पिपासा की तृप्ति नहीं होगी।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए प्रतिदिन ब्रह्माजी के गायत्री मंत्र के 108 जाप करें और हनुमान मंदिर में जाकर उपासना करें।

अंर्तदशा :– शनि – राहु
(14/05/2033 - 20/03/2036)

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है। आपके लिए यह 02/10/2019 को प्रारंभ होकर 01/10/2038 को समाप्त होगी। इस महादशा में राहु की अंतर्दशा 2 वर्ष 10 मास की होगी जो आपके लिए 14/05/2033 को प्रारंभ होकर 20/03/2036 को समाप्त होगी।

राहु आपकी जन्मपत्री में चतुर्थ भाव में स्थित है। चतुर्थ भाव माता, स्वयं का मकान, घरेलू वातावरण, व्यक्तिगत संबंध, वाहन, बाग–बगीचे, पैतृक संपत्ति, शिक्षा, दूध, तालाब और झील आदि का प्रतिनिधि है। राहु छाया ग्रह है। इसकी स्वयं की राशि नहीं होती है। इसे अशुभ समझा जाता है पर यह स्थिति के अनुसार शुभ/अशुभ होता है।

इस अवधि में आपको माता–पिता (संभवतः माता) के माध्यम से अचल संपत्ति आदि का लाभ हो सकता है। आप असंतुष्ट, अप्रसन्न और विचलित रह सकते हैं। मित्र कम होंगे, ईमानदारी में कमी हो सकती है। बुद्धिमत्ता कम हो सकती है, कोई धोखा दे सकता है। माता–पिता में से एक आप से अप्रसन्न होकर दूर रह सकता है।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए राहु के वैदिक मंत्र के 18000 जाप करें।

अंर्तदशा :– शनि – गुरु
(20/03/2036 - 01/10/2038)

शनि महादशा की अवधि 19 वर्ष होती है आपके लिए यह 02/10/2019 को प्रारंभ होकर 01/10/2038को समाप्त होगी। इस महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा 2 वर्ष 6 मास 12 दिन की होगी जो आपके लिए 20/03/2036 को प्रारंभ होकर 01/10/2038 को समाप्त होगी।

बृहस्पति आपकी जन्मपत्री में लग्न में स्थित है। लग्न शारीरिक बनावट, आकृति, स्वास्थ्य, जन्मजात स्वभाव और आदतें, सम्मान, गरिमा, सामान्य शुभत्व, चेहरे का ऊपरी भाग, आयु और जीवन की रुपरेखा आदि का परिचायक है।

बृहस्पति शुभ ग्रह है। लग्न में स्थित होकर बृहस्पति आपकी कुंडली के 5, 7, 9 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप बुद्धिमान और धनी होंगे। जिस वस्तु की इच्छा करेंगे, वह आपको प्राप्त हो जाएगी मगर सब कार्यों में बाधाएं आएंगी। प्रसन्नचित्त रहेंगे। यह अंतर्दशा शुभ रहेगी क्योंकि बृहस्पति की कृपा आप और आपके परिवारजनों पर रहेगी।

शुभत्व में वृद्धि के लिए बृहस्पति के वैदिक मंत्र के 19000 जाप करें।

महादशा :– बुध
(01/10/2038 - 02/10/2055)

बुध की महादशा 01/10/2038 को आरम्भ होगी और 17 वर्ष की होकर 02/10/2055 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में बुध नवम भाव में स्थित है। इसके पूर्व आपकी 19 वर्ष की शनि दशा चला रही थी। शनि के कारण आपको जीवन का सुख और बच्चों से आनन्द मिला होगा और शिक्षा उत्तम हुई होगी। बुध की वर्तमान दशा में आपकी दूर की यात्रा तथा उच्च शिक्षा होगी और सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप में शक्ति, स्फूर्ति और उत्साह रहेगा और आप हमेशा सक्रिय रहेंगे। आप खुश तथा आशावादी रहेंगे। मौसम में परिवर्तन के कारण ज्वर, विषाणुजन्य संक्रामक बीमारी, चर्मरोग, स्नायविक–थकावट तथा वात की हल्की शिकायत हो सकती है। इन मामूली बीमारियों को छोड़ आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक स्थिति अत्यन्त मजबूत होगी। व्यवसाय–व्यापार से उपार्जन में वृद्धि होगी। विदेश से लाभ हो सकता हैं। सट्टे से लाभ होगा, पिता से लाभ मिलेगा। जीविका तथा व्यवसाय के लिये लेखा, पत्रकारिता, शिक्षण, तथा सभी बौद्धिक कार्यों का चयन कर सकते हैं। सूती कपड़ा, रत्न, पुस्तक, लेखन–सामग्री, कम्प्यूटर या हाथ से बनी वस्तुओं का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों के जीविकोपार्जन में सफलता तथा आय में वृद्धि होगी और सहकर्मियों का अनुग्रह प्राप्त होता। आपको विदेश तथा ठेके से लाभ होगा। व्यवसाय–व्यापार से जुड़े लोगों को विरोधियों पर विजय और सभी कार्यों में सफलता मिलेगी तथा रोजगार और व्यापार में विस्तार के नये अवसर मिलेंगे। व्यापार या विदेश से कारोबार में वृद्धि होगी। अर्थ तथा व्यवसाय में स्थिरता और प्रगति के लिए यह दशा उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जमीन–जायदाद :

इस दशा के दौरान आपको जीवन का सुख मिलेगा और आप भाग्यशाली होंगे। शनि की अन्तर्दशा के दौरान वाहन–सुख तथा सभी प्रकार का आराम मिलेगा। जमीन–जायदाद के सभी लेन–देन लाभदायक होंगे। गुरु की अन्तर्दशा में आपकी छोटी यात्रा और बुध की अन्तर्दशा में लम्बी यात्रा होगी जो अति उत्तम तथा लाभदायक सिद्ध होगी। आप तीर्थाटन पर जाएंगे या धर्मस्थलों की यात्रा करेंगे।

शिक्षा :

इस दशा में आपकी शिक्षा अति उत्तम होगी। आप उच्च शिक्षा प्राप्त करेंगे और अपनी पसन्द की संस्था में शिक्षा ग्रहण करेंगे। आप अपनी सभी परीक्षाओं और साक्षात्कारों में सफल होंगे। आप विज्ञान, गणित तथा वाणिज्य में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करेंगे। इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा विदेश में हो सकती है। लेखा, वाणिज्य, साहित्य, कम्प्यूटर विज्ञान, रचनात्म

पत्रकारिता, मीडिया, जन संचार आदि में आपकी रुचि होगी। आप प्रतिभाशाली, कूटनीतिक, तथा बहुमुखी हैं और विभिन्न विषयों में आपकी रुचि है। आपका दिमाग विवेकपूर्ण तथा विश्लेषणात्मक है और सभी बौद्धिक कार्यों में अच्छा करेंगे।

परिवार :

आपको बच्चों से सुख मिलेगा। आपके जीवन साथी को संबंधियों से सहायता, शत्रुओं और विरोधियों पर विजय तथा सम्मान मिलेगा और उनकी यात्रा तथा प्रगति होगी। आपके पिता को यश, ख्याति तथा धन की प्राप्ति तथा यात्रा होगी। आपके छोटे भाई–बहनों को साझेदारों से लाभ, यात्रा तथा व्यापार में सफलता मिलेगी जबकि बड़ों को हर प्रकार का लाभ मिलेगा, उनके मित्र प्रभावशाली होंगे और उनकी इच्छाओं की पूर्ति होगी। भाई–बहनों के साथ आपका सम्बन्ध उत्तम रहेगा। आप भाग्यशाली हैं। इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, धन तथा पिता से लाभ मिलेगा और अध्यात्म की ओर आपका झुकाव होगा।

अन्तर दशा :

बुध की महादशा में बुध की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको यश, ख्याति तथा सुख मिलेगा। केतु कुछ समस्याएं उत्पन्न कर सकता है। शुक्र की अन्तर्दशा में यश, ख्याति तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होगी और स्वास्थ्य उत्तम रहेगा जबकि चन्द्र की अन्तर्दशा में जीवन–वृत्ति में उन्नति मिलेगी। मंगल की अन्तर्दशा के दौरान व्यापार तथा साझेदारों से लाभ मिलेगा जबकि राहु की अन्तर्दशा में कुछ समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। गुरु की अन्तर्दशा में आपकी छोटी यात्रा तथा मामूली स्वास्थ्य समस्याएं हो सकती हैं जबकि शनि की अन्तर्दशा में शक्ति, अधिकार, यश और ख्याति की प्राप्ति होगी।

अंर्तदशा :– बुध – बुध
(01/10/2038 - 27/02/2041)

आपके लिए बुध की महादशा 01/10/2038 को प्रारंभ हो रही है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा बुध की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 4 मास 27 दिन होगी। आपके लिए यह 01/10/2038 को प्रारंभ होकर 27/02/2041 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध बुद्धिमत्ता, स्मृति और वाणी का कारक है।

इस अवधि में आपको उच्च शिक्षा में प्रवेश मिल सकता है। दर्शनशास्त्र में रुचि हो सकती है। धार्मिक या शैक्षणिक यात्रा से लाभ हो सकता है। विदेश से संपर्क भी लाभदायक हो सकता है। विज्ञान में दक्ष हो सकते हैं। पिता से संबंध मधुर रहेंगे। छोटे भाई–बहनों से लाभदायक और मधुर संबंध रहेंगे। महत्वपूर्ण फैसले करेंगे। व्यापार से लाभ होगा।

आपके जीवनसाथी की लघु यात्राएं हो सकती हैं। आपके पिता को उच्चपद, प्रसिद्धि और ज्ञान–विज्ञान में सफलता मिलेंगी। माता का स्वास्थ्य उत्तम होगा; प्रगति में बाधा आ सकती है। आपके भाई–बहनों के लिए साझेदारी से लाभ, व्यापार में सफलता, नये व्यापार की शुरुआत, इच्छाओं की पूर्ति, सब सुख–सुविधाओं और विभिन्न माध्यमों से धनागम का संकेत है।

आपकी संतान शिक्षा में सफल रहेगी, प्रसिद्धि मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो निवेश और सट्टेबाजी से लाभ होगा, उच्च पद प्राप्त होगा।

अगर आप कार्यरत हैं तो भूतकाल में किये परिश्रम से लाभ होगा। परामर्शदाताओं के खर्चे बढ़ेंगे, लोग सहयोग करेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। अरिष्ट से बचाव के लिए मूंग की दाल दान में दें।

अंर्तदशा :– बुध – केतु
(27/02/2041 - 24/02/2042)

आपके लिए बुध की महादशा 01/10/2038 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में दूसरी अंतर्दशा केतु की होगी जिसकी अवधि 11 मास 27 दिन रहेगी। आपके लिए यह 27/02/2041 को प्रारंभ होकर 24/02/2042 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु मोक्ष और नाना का कारक है।

इस अवधि में आप सफल और प्रसिद्ध होंगे, साहस का परिचय देंगे। खुश रहेंगे। ज्ञानार्जन में रुचि होगी। माता–पिता से संबंध उत्तम रहेंगे। तीर्थयात्रा हो सकती है। कार्यक्षेत्र में सफलता मिलेगी। शिक्षा उत्तम होगी। माता से संबंध सकारात्मक रहेंगे। अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं, वाहन सुख रहेगा। पुरखों की जायदाद प्राप्त हो सकती है। बहुत सारे मित्र होंगे। अध्यात्म में रुचि होगी।

आपके जीवनसाथी सफल रहेंगे, अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं। आपके पिता धनी

और भाग्यशाली होंगे। माता को साझेदारी से लाभ होगा। आपके भाई–बहनों के लिए अप्रत्याशित परिवर्तन, अचानक लाभ, खर्चे और यात्रा का योग है।

आपकी संतान कृतसंकल्प होगी और लक्ष्य को प्राप्त करेगी। स्पर्धियों पर विजय मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो सहकर्मियों का सहयोग मिलेगा, मामा से खुशियां मिलेंगी।

अगर आप सेवारत हैं तो भाग्यशाली रहेंगे, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं की आय बढ़ेगी; सम्मान में वृद्धि होगी। व्यापारियों को पहले किये निवेश से लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए मंदिर में दान दें।

अंर्तदशा :– बुध – शुक्र
(24/02/2042 - 25/12/2044)

आपके लिए बुध की महादशा 01/10/2038 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में तीसरी अंतर्दशा शुक्र की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 10 मास होगी। आपके लिए यह 24/02/2042 को प्रारंभ होकर 25/12/2044 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शुक्र सौंदर्य, शांति और समृद्धि का कारक है।

इस अवधि में आपके जीवन में अचानक कुछ घट सकता है; परिवर्तन हो सकता है। अप्रत्याशित धन प्राप्त हो सकता है। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, दुर्घटनाओं से बचे रहेंगे। प्रसन्नचित्त रहेंगे। जीवनसाथी के माध्यम से धनलाभ हो सकता है। अध्यात्म में रुचि होगी। साझेदार के माध्यम से या विरासत द्वारा धनलाभ हो सकता है। पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा। विभिन्न माध्यमों से धनागम होगा। उत्तम सुविधाएं, उत्तम भोजन, आभूषण और सुंदर वस्तुएं प्राप्त होंगी।

आपके जीवनसाथी धनी बनेंगे, सुख–साधनसंपन्न रहेंगे, पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा। आपके पिता के खर्चे बढ़ सकते हैं। यात्राएं होंगी। माता को निवेश या सट्टेबाजी से लाभ होगा। आपके भाई–बहनों के लिए उत्तम स्वास्थ्य, शत्रुओं पर विजय, कार्यक्षेत्र में सफलता, अच्छी आय, उत्तम मित्र और प्रसन्नता का संकेत है।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी, परिवारजनों और मित्रों से संबंध उत्तम होंगे। अगर वे कार्यरत हैं तो जीवन सुखमय होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो स्वयं के प्रयास से सफलता मिलेगी। परामर्शदाता धन कमाएंगे। व्यापारियों को कई माध्यमों से लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। गंभीर बीमारी का ठीक से इलाज करायें। शुभत्व में वृद्धि के लिए शुक्र मंत्र का जाप करें।

अंर्तदशा :– बुध – सूर्य
(25/12/2044 - 01/11/2045)

आपके लिए बुध की महादशा 01/10/2038 को प्रारंभ हुई थी। इसमें चौथी अंतर्दशा सूर्य की होगी जिसकी अवधि 10 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 25/12/2044 को प्रारंभ होकर 01/11/2045 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य स्वास्थ्य, ऊर्जा और आत्मा का कारक है।

इस अवधि में आप सफल और समृद्ध बनेंगे। व्यापार में धन कमा सकते हैं। अध्यात्म में रुचि हो सकती है। लंबी यात्रा हो सकती है। उच्चशिक्षा के लिए प्रवेश मिल सकता है। सब सुख उपलब्ध रहेंगे। दक्षता में वृद्धि होगी। सब काम बन जाएंगे; उच्च पद और प्रसिद्धि का योग है। साहित्य और संचार माध्यम से लाभ हो सकता है।

आपके जीवनसाथी धनार्जन करेंगे, लघु यात्राएं और कार्यों में सफलता की संभावना है। आपके पिता को सफलता और कार्यों में प्रगति का सुख रहेगा। माता को धन, उच्चपद और आत्मिक उत्थान का संकेत है। आपके भाई–बहनों को साझेदारों से लाभ होगा, वांछित स्थान पर तबादला हो सकता है; विवाह, सफलता, सरकार से लाभ, धन और पिता से लाभ की संभावना है।

आपकी संतान को परीक्षा में सफलता मिलेगी; बौद्धिक शक्ति का विकास होगा। अगर वे कार्यरत हैं तो कार्यों में सफलता मिलेगी, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

अगर आप सेवारत हैं तो साख में वृद्धि होगी। परामर्शदाताओं के खर्चे बढ़ सकते हैं ; यात्राएं हो सकती हैं। व्यापारियों के लाभ और सक्रियता में वृद्धि होगी।

स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। मामूली पित्तविकार हो सकता है। शुभत्व में वृद्धि के लिए सूर्य गायत्री मंत्र का जाप करें।

अंर्तदशा :– बुध – चन्द्र
(01/11/2045 - 02/04/2047)

आपकी बुध की महादशा 01/10/2038 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में पांचवी अंतर्दशा चंद्रमा की होगी, जिसकी अवधि 1 वर्ष 5 मास होगी। आपके लिए यह 01/11/2045 को प्रारंभ होकर 02/04/2047 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र माता, सरकारी कृपा और चेहरे की चमक का कारक है।

इस अवधि में आप कार्यक्षेत्र में सफल रहेंगे। विवाहित जीवन सुखी होगा। मानसिक और भावनात्मक रूप से खुश रहेंगे। यात्रा से खुशियां मिलेंगी। व्यापार में, खास तौर पर तरल पदार्थ, रसायन और औषधि आदि के उद्यम में लाभ होगा। महिलाओं से संबंधित कार्य भी लाभदायक होगा। सब सुख–सुविधाएं उपलब्ध रहेंगी। बहुत से मित्र होंगे। समाज में सफलता

और लोकप्रियता मिलेंगी।

आपके जीवनसाथी को समृद्धि, सफलता और लोकप्रियता मिलेंगी। आपके पिता धन का संचय करेंगे, लक्ष्य प्राप्त करेंगे। माता अचल संपत्ति प्राप्त करेंगी, पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा, वाहन सुख होगा।

आपके भाई–बहनों के लिए उत्तम शिक्षा, लाभकारी निवेश, संतानसुख या संतान का जन्म, दान में रुचि, सौभाग्य, खुशी और पिता से प्रसन्नता का संकेत है।

आपकी संतान सफल होगी। अगर वे सेवारत हैं तो संचारमाध्यम से लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो धनागम होगा, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं की आय में वृद्धि होगी। व्यापारी खूब धन कमाएंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। पेट की मामूली व्याधि हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए किसी कन्या को वस्त्र दान में दें।

अंर्तदशा :– बुध – मंगल
(02/04/2047 - 29/03/2048)

आपके लिए बुध की महादशा 01/10/2038 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में छठी अंतर्दशा मंगल की होगी जिसकी अवधि 11 मास 27 दिन रहेगी। यह 02/04/2047 को प्रारंभ होकर 29/03/2048 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल साहस, महत्वाकांक्षा और आत्मविश्वास का कारक है।

इस अवधि में आपको हर प्रकार से लाभ होगा। धनागम होगा, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, विभिन्न वस्तुएं क्रय करेंगे। आप धनी, सफल और प्रभावशाली बनेंगे। बहुत से मित्र होंगे जिनसे सहायता मिलेगी। संतान सुखकारी रहेगी। निवेश और सट्टेबाजी से लाभ हो सकता है। तकनीकी शिक्षा में सफल होंगे। मातहत सहयोग करेंगे। किराये से अच्छी आय होगी। मुकदमे में जीत होगी। कटु वचनों के प्रयोग से बचें।

आपके जीवनसाथी भाग्यशाली होंगे; आय अच्छी होगी। आपके पिता धनी बनेंगे, सब सुविधाएं उपलब्ध होंगी, स्वास्थ्य अच्छा रहेगा।

माता को अचानक धनलाभ हो सकता है; अप्रत्याशित घटना घट सकती है।

आपके भाई–बहनों के लिए यात्रा, आकांक्षाओं की पूर्ति, ज्ञान–विज्ञान से संबंधित कार्य, प्रभावशाली व्यक्तित्व, उत्तम स्वास्थ्य, शिक्षा, धन और आत्म–विश्वास का संकेत है।

अपकी संतान को सामूहिक कार्यों में लाभ होगा। अगर वे सेवारत हैं तो साझेदारी से लाभ होगा, यात्राएं होंगी।

द्य ण ण ण

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय में खुशी का वातावरण रहेगा। परामर्शदाता धन कमाएंगे। व्यापारी सौभाग्यशाली रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। कानों में मामूली शिकायत हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए हनुमान चालीसा का पाठ करें।

अंर्तदशा :– बुध – राहु
(29/03/2048 - 17/10/2050)

आपके लिए बुध की महादशा 01/10/2038 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा राहु की होगी, जिसकी अवधि 2 वर्ष 6 मास 18 दिन रहेगी। आपके लिए यह 29/03/2048 को प्रारंभ होकर 17/10/2050 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक समृद्धि और अचानक, अप्रत्याशित घटनाओं का कारक है।

इस अवधि में आपकी भौतिक सुखों की इच्छा तीव्र रहेगी। राहु की दशम भाव पर दृष्टि के कारण आप प्रसिद्ध होंगे। कार्यक्षेत्र में उन्नति होगी। समाज की भलाई के कार्य करेंगे। समाज में प्रतिष्ठा बढ़ेगी। व्यापार में लाभ होगा, शत्रुओं पर विजय होगी। उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे।

आपके जीवनसाथी प्रसिद्ध बनेंगे, कार्य पूर्ण होंगे। आपके पिता को अचानक धनलाभ हो सकता है; उनके जीवन में कोई अप्रत्याशित घटना घट सकती है। माता का स्वास्थ्य उत्तम होगा, शत्रुओं से उनकी रक्षा होगी। आपके भाई–बहनों के लिए निवेश में सफलता, संतान सुख या संतान का जन्म, उच्चपद, धन, स्पर्धियों पर विजय का संकेत है।

आपकी संतान को लक्ष्य पाने के लिए परिश्रम करना होगा। अगर वे कार्यरत हैं तो तबादला हो सकता है, खर्चे बढ़ेंगे, विदेश यात्रा हो सकती है और नयी मित्रता से लाभ हो सकता है।

अगर आप सेवारत हैं तो आय बढ़ेगी; आकांक्षाएं पूर्ण होंगी। परामर्शदाताओं को साझेदारी से लाभ होगा। व्यापारी धन कमाएंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। छाती की मामूली शिकायत हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए काले उड़द, नीले वस्त्र और सतनजा दान दें।

अंर्तदशा :– बुध – गुरु
(17/10/2050 - 22/01/2053)

आपके लिए बुध की महादशा 01/10/2038 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में आठवीं अंतर्दशा बृहस्पति की है, जिसकी अवधि 2 वर्ष 3 मास 6 दिन है। आपके लिए यह 17/10/2050 को प्रारंभ होकर 22/01/2053 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति बुद्धि, धन, समृद्धि और उच्चकोटि के ज्ञान का कारक है।

इस अवधि में आप प्रसन्न, सफल और धनी बनेंगे। पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा। संतानसुख रहेगा। स्वास्थ्य और कार्यक्षमता उत्तम रहेंगे। अध्यात्म में उन्नति हो सकती है। विवाह हो सकता है। उच्चपद मिल सकता है। व्यापार में लाभ और विस्तार की संभावना है। धनी बनेंगे। यात्रा हो सकती है। कार्यों में सफलता मिलेगी, कार्यक्षमता उत्तम होगी। आपके जीवनसाथी को कार्यों और व्यापार में सफलता मिलेगी। आपके पिता धनी होंगे; पारिवारिक सुख मिलेगा। माता सफल और प्रसिद्ध होंगी।

आपके भाई–बहनों के लिए धन का संचय, प्रभावशाली मित्र, यात्रा, सौभाग्य और आकांक्षाओं की पूर्ति का संकेत है। आपकी संतान सौभाग्यशाली होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो पिता से सकारात्मक संबंध होंगे, प्रसिद्ध बनेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो धन कमाएंगे; उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं को वर्तमान में किये निवेश से लाभ होगा। व्यापारियों के धनार्जन में वृद्धि होगी; यात्राएं होंगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए बृहस्पति के मंत्र का जाप करें।

ऊँ बृं वृहस्पतये नमः

अंर्तदशा :– बुध – शनि
(22/01/2053 - 02/10/2055)

आपके लिए बुध की महादशा 01/10/2038 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में नवीं अंतर्दशा शनि की होगी जो आपके लिए 22/01/2053 को प्रारंभ होकर 02/10/2055 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु और धैर्य का कारक है।

इस अवधि में आपके सब कार्य सफलतापूर्वक पूर्ण होंगे, मगर प्रारंभ में बाधाएं आएंगी। आप अपने समूह के नेता हो सकते हैं। आत्मविश्वास और प्रसिद्धि में वृद्धि होगी। कोई भी काम करने से पहले सावधानी से विश्लेषण करेंगे। प्रत्येक कार्य में धैर्य, कर्मठता का परिचय देंगे। उत्साह उत्तम होगा, सफलता मिलेगी। विदेश यात्रा हो सकती है, विवाह या साझेदारी के कारण जिम्मेदारियां बढ़ सकती हैं। उच्चपद प्राप्त होगा, धनी बनेंगे।

आपके जीवनसाथी धनी बनेंगे। आपके पिता को कार्यों में सफलता मिलेगी। माता उच्चपद प्राप्त करेंगी, व्यापार में लाभ होगा। आपके भाई–बहनों के लिए प्रोन्नति, व्यापार में लाभ, धन और अचल संपत्ति की अचानक प्राप्ति, प्रसन्नता, उत्साह में वृद्धि और कार्यों में सफलता का संकेत है।

आपकी संतान की उच्चशिक्षा उत्तम होगी, सफलता मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो समाज में सफलता मिलेगी, प्रोन्नति ओर विदेश यात्रा संभव हैं।

अगर आप सेवारत हैं तो अचानक परिवर्तन होगा, यात्रा होगी। परामर्शदाता अचल

संपत्ति क्रय करेंगे, सफल होंगे। व्यापारियों को साझेदारी से लाभ होगा, यात्रा होगी, धन कमाएंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए शनि यंत्र का जाप करें।

ऊँ शं शनैघ्चराय नमः

महादशा :– केतु
(02/10/2055 - 01/10/2062)

केतु की महादशा 02/10/2055 को आरम्भ और 01/10/2062 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 7 वर्ष है।

आपकी जन्मकुण्डली में केतु दशम भाव में स्थित है जहाँ से इसकी दृष्टि चतुर्थ भाव पर है। इसके पूर्व आपकी बुध की दशा चल रही थी जिसकी अवधि 17 वर्ष थी। बुध के कारण आपको सम्पत्ति, समृद्धि, विरोधियों पर विजय तथा कुछ मामूली स्वास्थ्य समस्या हुई होगी। केतु की वर्तमान दशा में आपको यश ओर ख्याति मिलेगी और जीवन में प्रगति तथा लाभ होगा।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप खुश और आशावादी होंगे। केतु के कारण आपको संक्रामक बीमारी तथा विषाणुजन्य बुखार, चर्मरोग, हृदय–पीड़ा, निचले अंगों में पीड़ा बुखार फोड़ा तथा अल्सर आदि हो सकते हैं। समय पर उपाय करने से इनसे बचाव हो सकता है।

अर्थ तथा व्यवसाय :

आपकी आर्थिक स्थिति उत्तम होगी। व्यवसाय–व्यापार में उपार्जन अच्छा होगा। शत्रुओं–विरोधियों पर विजय मिलेगी। सट्टा–कार्य कम करें। पिता से कुछ लाभ होगा। जीविका–व्यवसाय के लिए कम्प्यूटर प्रौद्योगिकी, परिष्कृत कला, इंजीनियरिंग, सम्पर्क अधिकारी का कार्य, न्यायिक सेवा, प्रबन्धन तथा भाषा के क्षेत्र का चयन कर सकते हैं। रत्न, विलासिता–सामग्री, कम्प्यूटर, चमड़े के सामान, कपड़े, रबड़ तथा प्लास्टिक आदि का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों को कार्य स्थान में अनुकूल परिवर्तन आय में वृद्धि तथा सम्मान की प्राप्ति होगी। आपको वरिष्ठ कर्मचारियों का अनुग्रह तथा सहकर्मियों–सहयोगियों का सहयोग मिलेगा। व्यापार–व्यवसाय से जुड़े लोगों के जीवन में प्रगति, आय में वृद्धि तथा लाभ और व्यापार का विस्तार होगा। आर्थिक और व्यावसायिक उन्नति के लिए यह दशा उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जायदाद :

मंगल की अन्तर्दशा के दौरान आपको वाहन–सुख मिलेगा। आपकी जमीन–जायदाद में वृद्धि होगी और साझेदारी में लाभ होगा। गुरु की अन्तर्दशा में आपकी छोटी और बड़ी दोनों यात्राएं होंगी।

शिक्षा :

आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आप अपने अध्ययन में अच्छा करेंगे। आपको परीक्षा तथा प्रतियोगिता में सफलता मिलेगी। भाषा, दवा, प्रबन्धन, इन्जीनियरिंग तथा विधि के विषयों में आपकी रुचि होगी। आप कूटनीतिक और स्नेही हैं और आपके मित्रों की संख्या विशाल होगी। समाज सेवा में आपकी रुचि होगी।

परिवार :

परिवार के सदस्यों के साथ आपका संबंध मधुर रहेगा। आपके बच्चों की विरोधियों पर विजय और कुछ स्वास्थ्य समस्या होगी। उन्हें आपकी सहायता की जरूरत हो सकती है। आपके जीवनसाथी को सुख, जमीन जायदाद में वृद्धि और कुछ परिवर्तन होगा। आपकी माता को साझेदारों से लाभ, यात्रा और व्यापार में वृद्धि होगी जबकि पिता की आय तथा लाभ में वृद्धि होगी और उनके साथ अचानक कोई घटना घटेगी। आपके छोटे भाई–बहनों को अचानक लाभ और हानि और कुछ स्वास्थ्य संबंधी समस्या होगी जबकि बड़ों के आवास या व्यवसाय में परिवर्तन, यात्रा और व्यय होगा।

अन्तर्दशा :

केतु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के दौरान आपको यश, ख्याति और जीवन में प्रगति होगी। शुक्र की दशा में बच्चों से सुख, शिशु का जन्म, सफलता तथा यश और ख्याति की प्राप्ति होगी। चन्द्र की अन्तर्दशा के दौरान साझेदारों से लाभ, यात्रा और व्यवसाय में लाभ होगा। मंगल के कारण जमीन–जायदाद में वृद्धि होगी। राहु के कारण कुछ समस्या हो सकती है। गुरु की अन्तर्दशा के दौरान छोटी यात्रा और सगे–संबंधियों से सहायता मिलेगी। शनि की अन्तर्दशा में यश और ख्याति की प्राप्ति होगी, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और सफलता मिलेगी। बुध की अन्तर्दशा में स्वास्थ्य उत्तम रहेगा और धन–समृद्धि, यश तथा सफलता मिलेगी।

अंर्तदशा :– केतु – केतु
(02/10/2055 - 28/02/2056)

आपके लिए केतु महादशा 02/10/2055 को आरंभ हुई है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा केतु की होगी जिसकी अवधि 4 मास 27 दिन रहेगी। आपके लिए यह 02/10/2055 को प्रारंभ होकर 28/02/2056 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु मोक्ष, अचानक घटने वाली घटना और नाना का कारक है।

इस अवधि में आप सफल और प्रसन्न होंगे। कार्यक्षेत्र में उन्नति होगी, लोकप्रियता बढ़ेगी। प्रसन्नचित्त रहेंगे। कार्यक्षेत्र में कुछ बाधाएं आ सकती हैं। घरेलू जीवन सुखी रहेगा, माता से मधुर संबंध होंगे। अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं, वाहन सुख हो सकता है। आपके बहुत से मित्र होंगे।

आपके जीवनसाथी अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं। आपके पिता प्रसन्न रहेंगे, उत्तम भोजन और साधन उपलब्ध होंगे। माता को साझेदारी से लाभ होगा। आपके भाई–बहनों के लिए अप्रत्याशित घटना, यात्रा और परिवर्तन का संकेत है।

आपकी संतान लक्ष्य प्राप्त करेगी, शत्रुओं पर विजय होगी, मित्र सहयोग करेंगे। अगर वे कार्यरत हैं तो कार्यालय उत्तम होगा, मातहतों से उत्तम संबंध होंगे, स्वास्थ्य उत्तम होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो भाग्यशाली रहेंगे, आय बढ़ेगी। परामर्शदाता भाग्यशाली रहेंगे। व्यापारियों को पहले किये निवेश से लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए उड़द की दाल, तिल और कंबल दान करें।

अंर्तदशा :– केतु – शुक्र
(28/02/2056 - 29/04/2057)

केतु महादशा में शुक्र अंतर्दशा की अवधि 1 वर्ष 2 मास होगी ।

इस अवधि में आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, प्रसिद्ध और सम्मानित होंगे। व्यापार में लाभ होगा, धनी बनेंगे। साझेदार या विरासत के माध्यम से धन और अचल संपत्ति का लाभ हो सकता है। घरेलू जीवन सुखी रहेगा। सब सुख–साधन उपलब्ध रहेंगे। उत्तम भोजन का रसास्वादन करेंगे। दान–धर्म के कार्यों में रुचि होगी। आपकी मधुर वाणी से लोग प्रभावित होंगे।

आपके जीवनसाथी धनी बनेंगे, उनका पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा। आपके पिता के पास सब सुख–साधन उपलब्ध होंगे। माता भाग्यशाली रहेंगी, मित्रों से सहायता मिलेगी। आपके भाई–बहनों के लिए धन, शत्रुओं पर विजय, लोकप्रियता, सफलता और प्रसिद्धि का संकेत है।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो उनका जीवन आरामदेह रहेगा, अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं, प्रसन्न रहेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो स्वयं के प्रयास से ही सफलता मिल जाएगी। परामर्शदाताओं की आय अच्छी होगी। व्यापारियों को साझेदारी से लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। अरिष्ट से बचाव के लिए लक्ष्मीजी की उपासना करें।

अंर्तदशा :– केतु – सूर्य
(29/04/2057 - 04/09/2057)

आपके लिए केतु महादशा 02/10/2055 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सूर्य की अंतर्दशा की अवधि 4 मास 6 दिन होगी जो आपके लिए 29/04/2057 को प्रारंभ होकर 04/09/2057 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य पिता, स्वास्थ्य, ऊर्जा, कार्यक्षमता और आत्मा का कारक है।

इस अवधि में आप सफल और भाग्यशाली रहेंगे। व्यापार में धनार्जन उत्तम होगा। अध्यात्म में रुचि हो सकती है। शिक्षा या धर्म से संबंधित यात्राएं हो सकती हैं। साहित्य या संचार माध्यम द्वारा लाभ हो सकता है। कला में रुचि हो सकती है। प्रत्येक समस्या का सामना साहसपूर्वक करेंगे।

आपके जीवनसाथी को उत्साह के कारण सफलता मिलेगी, इच्छाएं पूर्ण होंगी। आपके पिता के आत्म–विश्वास में वृद्धि होगी; वे प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे।

आपके भाई–बहनों के लिए साझेदारी से लाभ, वांछित स्थान पर तबादला, धन और सफलता का संकेत है। आपकी संतान भाग्यशाली रहेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो इच्छाएं पूर्ण होंगी।

अगर आप कार्यरत हैं तो उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे, आय अच्छी होगी, सफल रहेंगे। परामर्शदाताओं के कार्य में कुछ बाधा आ सकती है। व्यापारियों की बिक्री उत्तम होगी, धन कमाएंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए गेहूं, गुड़ और तांबे का दान करें।

अंर्तदशा :– केतु – चन्द्र
(04/09/2057 - 05/04/2058)

आपके लिए केतु महादशा 02/10/2055 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में चंद्रमा अंतर्दशा की अवधि 7 मास रहेगी जो आपके लिए 04/09/2057 से प्रारंभ होकर 05/04/2058 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र मन, भावनाओं और माता का कारक है।

इस अवधि में आप प्रसन्न रहेंगे, ज्ञानार्जन उत्तम होगा। कार्यक्षेत्र में सफलता मिलेगी ; विवाहित जीवन सुखी रहेगा। अगर अविवाहित हैं तो विवाह हो सकता है। आप धनी बनेंगे ; सुख–साधन उपलब्ध रहेंगे। कार्यक्षेत्र में प्रोन्नति हो सकती हैं। सरकार से लाभ हो सकता है। स्वास्थ्य उत्तम होगा। जीवन सुखी रहेगा। आप दयालु हैं, अतः लोकप्रिय बनेंगे। समाज में सफलता मिलेगी।

आपके जीवनसाथी सफल और धनी होंगे; उन्हें सुख–साधन उपलब्ध रहेंगे। आपके पिता के बहुत से मित्र होंगे। माता का घरेलू सुख उत्तम होगा।

आपके भाई–बहनों के लिए निवेश में लाभ, सौभाग्य और पिता से लाभ का संकेत है। आपकी संतान सफल होगी; उनकी कला और संचार माध्यम में रुचि होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो प्रसन्न रहेंगे, लघु यात्राएं होंगी, विचार विनिमय और मार्केटिंग में प्रवीणता के कारण लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो आय बढ़ेगी। परामर्शदाताओं की सक्रियता बढ़ेगी, लाभार्जन उत्तम होगा। व्यापारी खूब धन कमाएंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए सफेद वस्तुओं, दूध और चावल का दान करें।

अंर्तदशा :– केतु – मंगल
(05/04/2058 - 01/09/2058)

आपके लिए केतु की महादशा 02/10/2055 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में मंगल अंतर्दशा की अवधि 4 मास 27 दिन रहेगी जो आपके लिए 05/04/2058 को प्रारंभ होकर 01/09/2058 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल शारीरिक शक्ति, ऊर्जा और आत्मविश्वास का कारक है।

इस अवधि में आपका धनागम उत्तम होगा; कार्यों में सफलता मिलेगी। साहस और मनोबल उत्तम होंगे। आपका प्रभावक्षेत्र बढ़ेगा। बहुत से हितकारी मित्र होंगे। भाई–बहनों और चाचा से उत्तम संबंध होंगे। निवेश से लाभ होगा। संतान से सुख मिलेगा या संतान का जन्म हो सकता है। रोग निरोधक क्षमता उत्तम होगी; शत्रुओं पर विजय मिलेगी।

आपके जीवनसाथी भाग्यशाली और धनी होंगे। आपके पिता साहसी और उत्साही होंगे। माता के जीवन में अप्रत्याशित परिवर्तन आ सकता है, अचानक लाभ हो सकता है।

आपके भाई–बहनों के लिए सफलता, धन, सक्रिय जीवन और प्रसिद्धि का संकेत है। आपकी संतान को साझेदारी से लाभ होगा। अगर वे कार्यरत हैं तो यात्रा हो सकती है, व्यापार से लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय उत्तम होगा, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे।

परामर्शदाताओं की आय अच्छी होगी। व्यापारी भाग्यशाली रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए मसूर की दाल, चंदन और लाल वस्त्र दान में दें।

अंर्तदशा :– केतु – राहु
(01/09/2058 - 19/09/2059)

आपके लिए केतु महादशा 02/10/2055 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में राहु अंतर्दशा 1 वर्ष 18 दिन की होगी जो आपके लिए 01/09/2058 को प्रारंभ होकर 19/09/2059 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु दादा, अचानक घटने वाली घटना और भौतिक सुखों का कारक है।

इस अवधि में आप अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं। चिंताओं से मुक्ति मिलेगी। समाज, व्यापार या कार्यक्षेत्र में लाभ होगा। समाज की भलाई का कार्य कर सकते हैं। प्रसिद्धि प्राप्त होगी। लंबी यात्रा या तीर्थयात्रा पर जा सकते हैं। विदेशियों से संबंध हो सकते हैं।

आपके जीवनसाथी कार्यक्षेत्र में प्रगति करेंगे और प्रसिद्ध बनेंगे।

आपके पिता को अचानक लाभ हो सकता है। माता सफल होंगी, सुख–साधन उपलब्ध होंगे, अन्य लोगों से सहायता प्राप्त होगी। आपके भाई–बहनों के लिए धन, उत्तम शिक्षा, उत्तम पारिवारिक जीवन, शत्रुओं पर विजय, कर्ज़ से मुक्ति और सफलता का संकेत है।

आपकी संतान को सफलता के लिए परिश्रम करना होगा। अगर वे कार्यरत हैं तो कुछ परिवर्तन हो सकता है।

अगर आप सेवारत हैं तो आय बढ़ेगी। परामर्शदाताओं को साझेदारी से लाभ होगा। व्यापारियों की सक्रियता बढ़ेगी, आय में वृद्धि होगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। अरिष्ट से बचाव के लिए हनुमानजी की उपासना करें।

अंर्तदशा :– केतु – गुरु
(19/09/2059 - 25/08/2060)

आपके लिए केतु महादशा 02/10/2055 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में बृहस्पति अंतर्दशा की अवधि 11 मास 6 दिन होगी। आपके लिए यह 19/09/2059 को प्रारंभ होकर 25/08/2060 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति ज्ञान, धन और संतान का कारक है।

इस अवधि में आप धनी और प्रसन्न होंगे। आय उत्तम होगी। शिक्षा में सफलता मिलेगी। पारिवारिक जीवन प्रसन्नतापूर्ण रहेगा। अध्यात्म में रुचि हो सकती है। शिशु का जन्म हो

सकता है। परीक्षा में सफलता मिलेगी। अगर अविवाहित हैं तो विवाह हो सकता है। विवाहित जीवन सुखी रहेगा। आप धनी बनेंगे, पिता से लाभकारी संबंध रहेंगे, दान–धर्म में रुचि लेंगे।

आपके जीवनसाथी को कार्यों में सफलता मिलेगी। आपके पिता की धर्म में रुचि होगी। माता सफल होंगी, धनी बनेंगी। आपके भाई–बहनों के लिए धन के संचय और इच्छाओं की पूर्ति का संकेत है।

आपकी संतान को परीक्षा में सफलता मिलेगी, ज्ञानार्जन उत्तम होगा। अगर वे कार्यरत हैं तो धनी, सफल और भाग्यशाली होंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो कुछ परिवर्तन हो सकते हैं। परामर्शदाताओं की आय बढ़ेगी, धनी बनेंगे। व्यापारियों का धनार्जन उत्तम होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए पीली वस्तुएं, दाल, हल्दी या शहद दान में दें।

अंर्तदशा :– केतु – शनि
(25/08/2060 - 04/10/2061)

आपके लिए केतु महादशा 02/10/2055 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा शनि की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 9 दिन होगी। यह अंतर्दशा 25/08/2060 को प्रारंभ होकर 04/10/2061 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि भाग्य और सेवा का कारक है।

इस अवधि में आपके काम प्रारंभिक व्यवधान के बाद बन जाएंगे। आप कर्मठ होंगे। विवाहित जीवन में कुछ तनाव हो सकता है। व्यापार में लाभ होगा, यात्राएं हो सकती हैं। आप उच्चपद प्राप्त कर सकते हैं, धनी बनेंगे। प्रसिद्धि, प्रोन्नति और व्यापार में लाभ का संकेत है। कार्यक्षेत्र की उपलब्धियों के कारण जनता सम्मान करेगी।

आपके जीवनसाथी धनी बनेंगे। आपके पिता को कार्यों और परीक्षा में सफलता मिलेगी। माता को उच्चपद प्राप्त हो सकता है। आपके भाई–बहनों के लिए धन, भूमि, वाहन और उत्साह का संकेत है।

आपकी संतान की विज्ञान में रुचि होगी, धनी बनेंगे, पिता से उत्तम संबंध होंगे, यात्रा होगी।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यक्षेत्र में अवांछित परिवर्तन हो सकते हैं। परामर्शदाताओं को कठोर परिश्रम करना होगा। व्यापारियों के लाभ में वृद्धि होगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए भोजन की पहली रोटी गाय को खिलाएं।

अंर्तदशा :– केतु – बुध
(04/10/2061 - 01/10/2062)

आपके लिए केतु महादशा 02/10/2055 को प्रांरभ हुई। इस महादशा में बुध की अंतर्दशा की अवधि 11 मास 27 दिन होगी जो आपके लिए 04/10/2061 को प्रारंभ होकर 01/10/2062 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध वाणी, बुद्धि, लेखन और तर्कशक्ति का कारक है।

इस अवधि में आपकी दूरस्थ स्थान या धार्मिक स्थल की यात्रा हो सकती है। उच्च शिक्षा में सफलता मिल सकती है। दर्शन शास्त्र में रुचि की संभावना है। दूरस्थ स्थान के मित्रों से संपर्क हो सकता है। धनी बनेंगे। विज्ञान में दक्ष बन सकते हैं। छोटे भाई–बहनों से उत्तम संबंध रहेंगे।

आपके जीवनसाथी की लघु यात्राएं हो सकती हैं, वे धनी बन सकते हैं। आपके पिता धनी और प्रसन्न होंगे; विभिन्न विषयों का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। माता शत्रुओं पर विजयी रहेंगी, कार्यों में सफल रहेंगी। आपके भाई–बहनों के लिए विभिन्न माध्यमों से लाभ, इच्छाओं की पूर्ति, साझेदारी से लाभ, संभवतः विवाह का संकेत है।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो निवेश से लाभ होगा। परामर्शदाताओं की यात्राएं होंगी, खर्चे बढ़ेंगे। व्यापारियों की यात्राएं होंगी; संचार माध्यम से लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए दुर्गाजी की उपासना करें।

महादशा :– शुक्र
(01/10/2062 - 01/10/2082)

आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा 01/10/2062 को आरंभ होकर 01/10/2082 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 20 वर्ष है।

शुक्र, जो स्वभावतः एक शुभ ग्रह है और संगीत, नाटक, अच्छे स्वाद, भावनात्मक आनन्द और मनोरंजन का द्योतक है। यह विवाह का कारक भी है। यह दो राशियों वृष तथा तुला का स्वामी है एवं मीन राशि में उच्च का जबकि कन्या राशि में निम्न का होता है। आपकी कुण्डली में यह अष्टम भाव में स्थित है। अष्टम भाव में स्थित यह आपकी जन्म कुण्डली के द्वितीय भाव को देख रहा है और इस भाव पर शुभ प्रभाव डाल रहा है। भाव, जिसमें यह स्थित है अर्थात अष्टम भाव दीर्घायु, पैतृक गुण, पैतृक सम्पत्ति, दुर्घटनाएँ, धोखे से मृत्यु, भाग्यहीनता, उदासी और अपयश का द्योतक है।

स्वास्थ्य :

अष्टम भाव में स्थित शुक्र भाव को प्रबलित कर रहा है जो दीर्घ आयु का द्योतक है। इसलिए आपकी उम्र काफी लम्बी होगी तथा आपको कोई बड़ी स्वास्थ्य समस्या या दुर्घटना नहीं होगी।

अर्थ संपत्ति :

शुक्र अष्टम भाव में स्थित है जो आपके वित्तीय जीवन में काफी उतार–चढ़ाव देगा। आपकी जन्म कुण्डली में यह अष्टम भाव से द्वितीय भाव, जो धन का भाव है, को देख रहा है। अतः इस दशा काल में धन की कमी नहीं होगी और आप चल तथा अचल सम्पत्ति में वृद्धि कर पाने की स्थिति में होंगे। आपको कुछ विरासती सम्पत्ति भी मिल सकती है।

व्यवसाय :

व्यावसायिक रूप से सुभ्यस्त आप जमीन, वाहन, अधिकार, तथा पद प्राप्त करेंगे। आप अपने व्यावसायिक क्षेत्र में ख्याति करेंगे। आप कोई भी व्यवसाय करें, सफल होंगे। आप शिक्षित होंगे और आपका झुकाव धर्म की ओर होगा।

पारिवारिक जीवन :

आपका पारिवारिक जीवन सौहार्द्र पूर्ण तथा नियमित होगा। जीवन में कुछ उदासी तथा बाधाएं आएंगी जिन्हें आप पार कर लेंगे। आपके पिता कुछ कठिनाइयों से गुजर सकते है अपने कार्य में असफल हो सकते हैं।

अंर्तदशा :– शुक्र – शुक्र
(01/10/2062 - 31/01/2066)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 01/10/2062 को प्रारंभ होकर 01/10/2082 को समाप्त होगी। इस महादशा में शुक्र की अंतर्दशा 3 वर्ष 4 मास की होगी। आपके लिए यह 01/10/2062 को प्रारंभ होकर 31/01/2066 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्री में अष्टम भाव में स्थित है। अष्टम भाव आयु, विरासत, दुर्घटना, दुर्भाग्य, दुख, चिंता, निराशा, हानि, बाधा, चोरी और डकैती का प्रतिनिधि है। शुक्र शुभ ग्रह है। अष्टम भाव में स्थित होकर शुक्र आपकी कुंडली के द्वितीय भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप धनी बनेंगे। वाहन आदि सभी सुख उपलब्ध रहेंगे। अत्यधिक संवेदनशील हो सकते हैं, अतः भावनाओं पर नियंत्रण आवश्यक है।

शुभत्व में वृद्धि के लिए शुक्र के तांत्रिक मंत्र के 64000 जाप करें और निम्न उपाय करें :

- चींटिओं को चीनी और आटा खिलाएं।
- कन्याओं को खीर खिलाएं।
- लक्ष्मीजी की उपासना करें।

अंर्तदशा :– शुक्र – सूर्य
(31/01/2066 - 31/01/2067)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष की होगी। आपके लिए यह 01/10/2062 को प्रारंभ होकर 01/10/2082 को समाप्त होगी। इस महादशा में सूर्य की अंतर्दशा 1 वर्ष की होगी जो 31/01/2066 को प्रारंभ होकर 31/01/2067 को समाप्त होगी।

सूर्य आपकी जन्मपत्री में नवम भाव में स्थित है। नवम भाव श्रद्धा, भाग्य, धार्मिक और आध्यात्मिक विचार, अंतर्ज्ञान, भविष्यज्ञान, उपासनास्थल, पिता, धर्मगुरु, लंबी यात्राएं, हवाई यात्रा, उच्च शिक्षा और घुटनों का प्रतिनिधि है। सूर्य आत्मा और पिता का कारक है और एक शक्तिशाली ग्रह है। नवम भाव में स्थित होकर सूर्य कुंडली के तृतीय भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपकी धर्म में रुचि होगी। पिता और गुरु के भक्त बनेंगे। आध्यात्मिक और धार्मिक कार्यों में मन लगेगा।

पुत्रों से खुशी प्राप्त होगी। उनके और स्वयं के प्रयत्नों से अचल संपत्ति प्राप्त करेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। संपत्ति प्राप्त हो सकती है। आप महत्वाकांक्षी और उद्य

द्य ए ए ए

मी होंगे।

अरिष्ट से बचाव के लिए सूर्य मंत्र का नित्य जाप करें और सूर्य के तांत्रिक मंत्र के 28000 जाप करें।

अंर्तदशा :– शुक्र – चन्द्र
(31/01/2067 - 01/10/2068)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष है। आपके लिए यह 01/10/2062 को प्रारंभ हुई थी और 01/10/2082 को समाप्त होगी। इस महादशा में चंद्र की अंतर्दशा 1 वर्ष 8 मास की होगी जो आपके लिए 31/01/2067 से प्रारंभ होकर 01/10/2068 को समाप्त होगी।

चंद्रमा आपकी जन्मपत्री में सप्तम भाव में स्थित है। सप्तम भाव आत्मीय संबंध, जीवनसाथी, व्यापार में साझेदार, मुकदमे, विदेश में प्रभाव और जीवन में खतरों का परिचायक है।

चंद्रमा मष्तिष्क और माता का कारक है।

छठे भाव में स्थित होकर चंद्रमा कुंडली के द्वादश भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अंतर्दशा में आपका व्यक्तित्व आकर्षक होगा, रंग में निखार आएगा। समाज में लोकप्रिय होंगेः हर काम में सफल रहेंगे। विवाहित जीवन सुखी रहेगा। व्यापार में साझेदार से उत्तम संबंध होंगे। कभी–कभी संवेदनशील होने और क्रोध के कारण हानि हो सकती है।

अरिष्ट से बचाव के लिए 5 रत्ती का मोती चांदी की अंगूठी में दायें हाथ की कनिष्ठिका में सोमवार को प्रातःकाल अंगूठी को दूध में धोकर, चंद्र का मंत्र पढ़ते हुए धारण करें।

अंर्तदशा :– शुक्र – मंगल
(01/10/2068 - 01/12/2069)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 01/10/2062 को प्रारंभ होकर 01/10/2082 को समाप्त होगी। इस महादशा में मंगल अंतर्दशा की अवधि 14 मास रहेगी। यह 01/10/2068 को प्रारंभ होकर 01/12/2069 को समाप्त होगी।

मंगल आपकी जन्मपत्री में एकादश भाव में स्थित है। एकादश भाव मित्रगण, समाज, महत्वाकांक्षा, इच्छाएं और उनकी पूर्ति, उद्यम में सफलता, धनलाभ, बड़े भाई, भाग्योदय और टखनों का परिचायक है। एकादश भाव में स्थित होकर मंगल आपकी कुंडली के 2, 5, 6 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपकी आय अच्छी होगी, धन संचित होगा। धन कमाने के लिए वांछित, अवांछित तरीकों को अपनाने में संकोच नहीं करेंगे। धन का अभिमान हो सकता है। भाषणकला में प्रवीण होंगे; वाणी कठोर, प्रभावशाली, अभिमान से भरी और क्रोधपूर्ण हो सकती है।

महत्वपूर्ण व्यक्तियों से आपका संपर्क रहेगा जिसके द्वारा अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं। आपकी धन की पिपासा शांत नहीं होगी।

अरिष्ट से बचाव के लिए 5 रत्ती का लाल मूंगा चांदी की अंगूठी में, मंगलवार के दिन प्रातःकाल कच्चेदूध से धोकर और हनुमान, गणेश या शिवजी की उपासना के उपरांत धारण करें।

अंर्तदशा :– शुक्र – राहु
(01/12/2069 - 01/12/2072)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष है। आपके लिए यह 01/10/2062 को प्रारंभ होकर 01/10/2082 को समाप्त होगी। इस महादशा में राहु अंतर्दशा 3 वर्ष की होगी। आपके लिए यह 01/12/2069 को प्रारंभ होकर 01/12/2072 को समाप्त होगी।

राहु आपकी जन्मपत्री में चतुर्थ भाव में स्थित है। चतुर्थ भाव माता, स्वयं का मकान, घरेलू वातावरण, व्यक्तिगत संबंध, वाहन, बाग–बगीचे, पैतृक संपत्ति, शिक्षा, दूध, तालाब और झील आदि का प्रतिनिधि है। राहु शुभ ग्रह है। चतुर्थ भाव में स्थित होकर राहु आपकी कुंडली के 10वें भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप घरेलू जीवन से असंतुष्ट, अप्रसन्न और विचलित रह सकते हैं। मित्रों का सहयोग प्राप्त करना कठिन होगा। माता–पिता से, विशेषकर माता से लाभ हो सकता है। अचल संपत्ति प्राप्त हो सकती है।

अरिष्ट से बचाव के लिए राहु के वैदिक मंत्र के 18000 जाप करें।

अंर्तदशा :– शुक्र – गुरु
(01/12/2072 - 02/08/2075)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 01/10/2062 को आरंभ हुई थी और 01/10/2082 को समाप्त होगी। शुक्र महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 8 मास रहेगी। आपके लिए यह 01/12/2072 को प्रारंभ होकर 02/08/2075 को समाप्त होगी।

बृहस्पति आपकी जन्मपत्री में प्रथम भाव में स्थित है। प्रथम भाव शारीरिक बनावट, आकृति, स्वास्थ्य, जन्मजात स्वभाव और आदतें, सम्मान, गरिमा, सामान्य शुभत्व, चेहरे का ऊपरी भाग, आयु और जीवन की रुपरेखा आदि का परिचायक है।

बृहस्पति शुभ ग्रह है। प्रथम भाव में स्थित होकर बृहस्पति आपकी कुंडली के 5, 7, 9 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप बुद्धिमान और धनी बनेंगे। विद्वता के कारण समाज में इज्ज़त

बढ़ेगी। वाहन सुख रहेगा। व्यायाम करने के कारण स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। लग्न में स्थित बृहस्पति बहुत शुभ समझा जाता है, अतः यह दशा बहुत शुभ रहेगी।

शुभत्व में वृद्धि के लिए बृहस्पति के उपाय करें। पीपल वृक्ष पर विशेषकर बृहस्पतिवार को बृहस्पति का मंत्र पढ़ते हुए जल छिड़कें।

अंर्तदशा :– शुक्र – शनि
(02/08/2075 - 01/10/2078)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती हैं। आपके लिए यह 01/10/2062 को प्रारंभ हुई थी और वद 01/10/2082 को समाप्त होगी। इस महादशा में शनि अंतर्दशा की अवधि 3 वर्ष 2 मास होगी। आपके लिए यह 02/08/2075 को प्रारंभ होकर 01/10/2078 को समाप्त होगी।

शनि आपकी जन्मपत्री में लग्न में स्थित है। लग्न शारीरिक बनावट, आकृति, स्वास्थ्य, जन्मजात स्वभाव और आदतें, सम्मान, गरिमा, सामान्य शुभत्व, चेहरे का ऊपरी भाग, आयु और जीवन की रुपरेखा आदि का परिचायक है।

शनि जातक के धैर्य की परीक्षा लेता है। यह शुभफल देने में देरी करता है मगर फल मिलता अवश्य है।

प्रथम भाव में स्थित होकर शनि आपकी कुंडली के 3, 7, 10 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपके स्वास्थ्य में गिरावट आ सकती है, मष्तिष्क रोग संभव है। पद और सम्मान की भी क्षति हो सकती है। धर्म में आस्था कम हो सकती है। वातरोग संभव हैं। अधिकारीगण अप्रसन्न रह सकते हैं।

परियोजनाओं में देरी होगी मगर सफलता जरुर मिलेगी।

अरिष्ट से बचाव के लिए निम्न उपाय करना श्रेयस्कर होगा :

- पीपल को जल अर्पित करें।
- भोजन करने से पूर्व पहला कौर गाय को दें।
- मछलियों को आटे की गोलियां खिलाएं।

अंर्तदशा :– शुक्र – बुध
(01/10/2078 - 01/08/2081)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 01/10/2062 को प्रारंभ हुई थी और वद 01/10/2082 को समाप्त होगी। शुक्र महादशा में बुध अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 10 मास रहेगी 01/10/2078 जो आपके लिए 01/08/2081 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्री में नवम भाव में स्थित है। नवम भाव श्रद्धा, भाग्य, धार्मिक और आध्यात्मिक विचार, अंतर्ज्ञान, भविष्यज्ञान, उपासनास्थल, पिता, धर्मगुरु, लंबी यात्राएं, हवाई यात्रा, उच्च शिक्षा और घुटनों का प्रतिनिधि है। नवम भाव में स्थित होकर बुध आपकी कुंडली के तृतीय भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप विद्वान और धनी बनेंगे। ज्ञान का प्रसार देश–विदेश में व्याख्यान आदि द्वारा कर सकते हैं। पिता और ज्येष्ठजनों से संबंध उत्तम रहेंगे।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए बुध के तांत्रिक मंत्र के 36000 जाप करें।

अंर्तदशा :– शुक्र – केतु
(01/08/2081 - 01/10/2082)

शुक्र महादशा की अवधि 20 वर्ष होती है। आपके लिए यह 01/10/2062 को प्रारंभ हुई थी और 01/10/2082 को समाप्त होगी। शुक्र महादशा में केतु अंतर्दशा 1 वर्ष 2 मास की होती है। आपके लिए यह 01/08/2081 को प्रारंभ होकर 01/10/2082 को समाप्त होगी।

केतु आपकी जन्मपत्रिका में दशम भाव में स्थित है। दशम भाव सम्मान, जनता, सत्ता, सफलता, पद और साख, दुनियादारी, प्रोन्नति, नियुक्ति, धार्मिक कार्य, सरकार से सम्मान और जांघों का परिचायक है।

केतु छाया ग्रह है। इसकी कोई राशि नहीं होती और न ही यह किसी राशि का स्वामी होता है।

दशम भाव में स्थित होकर केतु आपकी कुंडली के 4थे भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपको कार्यों में बाधाएं आएंगी। यद्यपि आप साहसी होंगे, मगर पापकर्म में लिप्त हो सकते हैं। धर्म में रुचि होगी, तीर्थयात्रा कर सकते हैं। गरीबों और ज़रुरतमंदों की मदद करेंगे।

अरिष्ट के बचाव के लिए केतु के तांत्रिक मंत्र के 72000 जाप करें।

महादशा :– सूर्य
(01/10/2082 - 01/10/2088)

सूर्य की महादशा 01/10/2082 को आरम्भ होगी और 6 वर्ष की होकर 01/10/2088 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य नवम भाव में स्थित है। सूर्य पिता, प्रतिष्ठा, सम्पत्ति, साहस, स्वास्थ्य, आनन्द और सात्विक स्वभाव का द्योतक है जबकि नवम भाव पिता, लम्बी यात्रा या तीर्थ यात्रा और उच्च शिक्षा का द्योतक है। अतः इस दशा में आपको आदर, शिक्षा तथा पिता से लाभ की प्राप्ति होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा में आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप शक्तिशाली होंगे और आप में जीवन–शक्ति प्रचुर मात्रा में रहेगी। आपमें स्वास्थ्यलाभ की अद्‌भुत क्षमता होगी और आप किसी भी रोग से जल्द छुटकारा प्राप्त कर लेंगे। अतिशयताओं का परित्याग करें। मानसिक तथा शरीरिक विश्राम की आवश्यकता है। आपको हृदय अथवा आँखों की सम्भावित बीमारी को रोकने के लिये सन्तुलित आहर लेना चाहिए। गिरने अथवा चोट से बचना चाहिए।

अर्थ :

इस दशा के दौरान आप अत्यधिक भाग्यशाली होंगे। आपको सम्पत्ति तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी। आपको पिता से लाभ होगा अथवा पैतृक सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। आप स्वयं भी नौकरी अथवा व्यवसाय से धनोपार्जन करेंगे। आप स्वभाव से उदार हैं, किन्तु, आपको व्यय के प्रति सावधान रहना चाहिए। तथाकथित मित्रों से आपकी हानि हो सकती है। किन्तु इस महादशा में आपको सम्पत्ति और समृद्धि की प्राप्ति होगी।

व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आप भाग्यशाली होंगे। आपको आपने सभी कार्यों में सफलता मिलेगी। आप एक जन्मजात नेता हैं और संगठनों, निगमों तथा अन्य सरकारी एजेसियों के प्रधान का कार्य अति सुन्दर ढंग से सम्पादित कर सकते हैं। आपको शक्तिशाली तथा आधिकारिक पद की प्राप्ति होगी। सैन्य तथा राजनीतिक कार्यों में आपकी रुचि होगी और आप उनमें अच्छा कर सकते हैं। प्रशासकीय कार्य, तकनीकी तथा विज्ञान सम्बन्धी सेवाएँ भी आपके अनुकूल होंगी। आपके छोटे भाई–बहनों को साझेदारी, यात्राओं तथा विदेश से लाभ मिलेगा। बड़े भाई–बहनों को सभी प्रकार के लाभ, प्रतिष्ठा, सम्पत्ति तथा मित्रों की प्राप्ति होगी। उनके साथ आपके सम्बन्ध उत्तम होंगे।

शिक्षा :

गुप्त विद्या में आपकी रुचि होगी अथवा आप चिकित्सा का क्षेत्र भी अपना सकते हैं।

अंर्तदशा :– सूर्य – सूर्य
(01/10/2082 - 19/01/2083)

आपके लिए सूर्य की महादशा 01/10/2082 को प्रारंभ हो रही है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा सूर्य की होगी जिसकी अवधि 3 मास 18 दिन होकर 19/01/2083 को समाप्त होगी। अंतर्दशा का स्वामी सूर्य पिता, अधिकार, शक्ति, नाम, प्रसिद्धि, ऊर्जा और आत्मा का कारक है।

यह अंतर्दशा आपके लिए बहुत भाग्यशाली है। आपको धन और सुख–सुविधाओं की प्राप्ति होगी। प्रशासन द्वारा सम्मानित होंगे। अधिकारी आप से प्रसन्न रहेंगे। किसी धार्मिक समारोह से आप संबद्ध रहेंगे और धर्मस्थलों की यात्रा करेंगे। सेवाकार्य से संबद्ध जातक प्रगति करेंगे। स्वतंत्र कार्यरत विद्वानों और व्यापारियों का खर्च बढ़ सकता है।

आपके पिता के धन में वृद्धि होगी। माता को स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए। भाई–बहनों को रोजगार प्राप्त होगा। मामा के परिवारजन लाभान्वित होंगे। विरोधियों पर आप विजयी रहेंगे। छोटे–भाई बहनों से कुछ मतभेद हो सकते हैं, जिन्हें आप धैर्य और नीति से निबटा सकते हैं।

स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, मगर सामान्य सावधानियों का पालन करें। भाग्यसंवर्धन के लिए लाल पुष्प, गुड़, चंदन, लाल वस्त्र का दान रविवार के दिन करें और गायत्री का जाप करें।

अंर्तदशा :– सूर्य – चन्द्र
(19/01/2083 - 21/07/2083)

आपकी सूर्य की महादशा 01/10/2082 को प्रारंभ हुई थी। इसमें दूसरी अंतर्दशा चंद्रमा की होगी जिसकी अवधि 6 मास है और यह 21/07/2083 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र मष्तिष्क, घर, माता और सौंदर्य का कारक है।

इस अंतर्दशा की अवधि में आपका स्वास्थ्य, धन, सम्मान और साख उत्तम रहेंगे। जाने माने संगठनों से आपकी भागीदारी रहेगी। व्यापार या ठेके आदि से धन का लाभ होगा। कोई दूरस्थ स्थान या विदेश की यात्रा हो सकती है। विदेश में नाम कमाने की संभावना है। सत्ता या अधिकार की प्राप्ति हो सकती है। राजनीति में सफलता मिलेगी। मुकदमें में जीत होगी।

वैवाहिक जीवन और गृहसुख उत्तम होंगे। अविवाहितों का विवाह हो सकता है। विवाह से लाभ होगा अथवा विवाह किसी धनी परिवार में हो सकता है। आपके माता–पिता सुख–सुविधाओं से युक्त रहेंगे। पिता धन कमाएंगे और जायदाद प्राप्त करेंगे। उनसे आपको लाभ होगा। आपके भाई–बहनों का समय भाग्यशाली रहेगा। माता के साथ आपके संबंध उत्तम रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। सुस्ती, सर्दी–जुकाम, कार्यक्षमता में कमी आदि की शिकायत हो सकती है। शुभत्व में वृद्धि के लिए किसी कन्या को श्वेत वस्त्रों का दान करें।

अंर्तदशा :– सूर्य – मंगल
(21/07/2083 - 25/11/2083)

आपकी सूर्य की महादशा 01/10/2082 को प्रारंभ हो रही है। इसमें तृतीय अंतर्दशा मंगल की है जिसकी अवधि 4 मास 6 दिन है। यह अंतर्दशा 25/11/2083 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल साहस, ऊर्जा और भाइयों का कारक है।

इस अवधि में आपको मित्रों से लाभ प्राप्त होगा। साहस, प्रसन्नता और धन की वृद्धि होगी। व्यवसाय/कार्य, सरकार, मातहतों और शुभेच्छुओं से लाभ प्राप्त होगा। मुकदमें में विजय प्राप्त होगी। प्रत्येक कार्य में सफलता मिलेगी। धन सरलता से आएगा। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शत्रुओं पर विजय होगी।

आपके जीवनसाथी या व्यापार में साझेदार की मेहनत की कमाई में वृद्धि होगी। आपके पिता की लघु यात्राएं हो सकती हैं। माता को जायदाद प्राप्त हो सकती हैं। छोटे भाई–बहनों की लंबी यात्राएं हो सकती हैं। बड़े भाई–बहनों को सफलता मिलेगी। सेवारत जातक विरोधियों को परास्त कर देंगे। परामर्शदाता मेहनत से धन कमाएंगे। व्यापारीगण व्यस्त रहेंगे। आपके बच्चे सक्रिय और स्फूर्तिवान रहेंगे और पढ़ाई में प्रगति करेंगे। अगर वे सेवाकार्य में हैं तो प्रगति करेंगे।

मामूली व्याधियां जैसे बायां कान या बायें ऊपरी अंग के रोग, ज्वर, घाव आदि आपको परेशान कर सकते हैं। शुभत्व में वृद्धि के लिए लाल वस्तुओं का दान दें।

अंर्तदशा :– सूर्य – राहु
(25/11/2083 - 19/10/2084)

आपके लिए सूर्य की महादशा 01/10/2082 को प्रारंभ हुई थी। इसमें चतुर्थ अंतर्दशा राहु की होगी। यह 25/11/2083 को प्रारंभ होकर 19/10/2084 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक सुख, दादा और तीर्थयात्रा का कारक है।

इस अवधि में जायदाद से अप्रत्याशित लाभ हो सकता है। निवास में परिवर्तन हो सकता है। विदेशियों से संपर्क/व्यापार संभव है। आपकी यात्रा होगी; विदेश भी जा सकते हैं। तीर्थयात्राएं होंगी। कार्य में व्यस्त रहेंगे और धन कमाएंगे।

जीवनसाथी के कार्यक्षेत्र में परिवर्तन हो सकता है। आपकी माता का स्वास्थ्य ठीक रहेगा। उनके साथ अच्छे संबंध बनाये रखने का प्रयास करें। पिता को स्वास्थ्य के प्रति सावधान रहना चाहिए। भाई–बहनों को अचानक धन का लाभ होगा। आपकी संतान को अच्छे अंक प्राप्त करने के लिए परिश्रम करना होगा। उन्हें ज्वर आदि मामूली बीमारी हो सकती है। उनके खर्चे बढ़ सकते हैं। यात्रा की संभावना है।

अगर आप सेवारत हैं तो वेतन में वृद्धि होगी। परामर्शदाताओं की साख बढ़ेगी।

व्यापारियों को लक्ष्य की प्राप्ति के लिए अधिक प्रयास करने होंगे। आपके मामा पक्ष के लोग भाग्यशाली रहेंगे।

आपको छाती के मामूली रोग हो सकते हैं; स्वास्थ्य का ध्यान रखें। शुभत्व में वृद्धि के लिए राहु मंत्र का जाप करें।

ऊँ रां राहवे नमः

अंर्तदशा :– सूर्य – गुरु
(19/10/2084 - 07/08/2085)

आपके लिए सूर्य की महादशा 01/10/2082 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा 9 मास 18 दिन की रहेगी। यह 19/10/2084 को प्रारंभ होकर 07/08/2085 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति धन, संतान और धर्म का कारक है।

आपके जीवन में धन, स्वास्थ्य और प्रसन्नता उत्तम रहेंगे। इस अवधि में आप सौभाग्यशाली और सफल रहेंगे। पैसा आसानी से आएगा। सब संकटों से रक्षा होगी। मित्रों और समर्थकों से लाभ होगा। सब बाधाओं को पार कर लेंगे। सट्टेबाजी और निवेश से लाभ होगा। आप पुराणों का अध्ययन कर सकते हैं। संतान से सुख मिलेगा। संतान का जन्म भी संभव है। अगर अविवाहित हैं तो विवाह हो सकता है। जीवनसाथी या व्यापार के साझेदार के लिए समय भाग्यशाली रहेगा। आपकी आय बढ़ेगी और कई यात्राएं हो सकती हैं।

आपके पिता सब सुख–सुविधाओं से युक्त रहेंगे। माता को नाम, सम्मान प्राप्त होंगे। उनकी आय बढ़ेगी। उन्हें अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए। भाई–बहनों को धन का लाभ होगा। आपकी संतान लेखन आदि कार्य में सफल हो सकती है।

अगर आप सेवारत हैं तो कुछ परिवर्तन हो सकते हैं। ग्रेच्युटी, सेवानिवृत्ति आदि से धनलाभ संभव है। परामर्शदाताओं को कार्यस्थल पर धननिवेश करना लाभकारी रहेगा। व्यापारियों के खर्चे बढ़ सकते हैं। अनुबंधों पर हस्ताक्षर हो सकते हैं।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा मगर सामान्य सावधानियों का पालन लाभकारी होगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए पीली वस्तुओं का दान करें।

अंर्तदशा :– सूर्य – शनि
(07/08/2085 - 20/07/2086)

आपकी सूर्य की महादशा जारी है। इसमें छठी अंतर्दशा शनि की है जिसकी अवधि 11 मास 12 दिन है। आपके लिए यह 07/08/2085 को प्रारंभ होगी और 20/07/2086 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु, संन्यास और दार्शनिक स्वभाव का कारक है।

आप शत्रुओं का नाश करने में सफल होंगे। विरोधियों और बीमारी से लड़ने की

शक्ति आप में विद्यमान रहेगी। आपका विवाह हो सकता है। छोटे भाई–बहनों से खुशी मिलेगी। आप किसी संस्था या विभाग के अध्यक्ष बन सकते हैं। अगर सरकारी नौकरी में हैं तो सफल रहेंगे।

जीवनसाथी को धन मिल सकता है। अचल संपत्ति भी क्रय कर सकते हैं। आपके पिता को परंपरागत निवेश से लाभ होगा। माता को खेती की भूमि से लाभ होगा; वे तीर्थयात्रा पर जा सकती हैं। आपके भाई–बहनों के आप से संबंध उत्तम रहेंगे। उन्हें प्रतिष्ठित मित्रों से लाभ होगा। आपके बच्चों के आप से संबंध उत्तम रहेंगे, मगर विवाद से बचें।

अगर आप सेवारत हैं तो सौभाग्य और धन का संकेत है। परामर्शदाताओं की अचल संपत्ति में वृद्धि होगी। व्यापारियों को अत्यधिक खर्चे से सावधान रहना चाहिए।

स्नायुतंत्र की देखभाल करें। थकान से बचें। कष्टों से छुटकारे के लिए शनि की आराधना और काली वस्तुओं का दान करें।

अंर्तदशा :– सूर्य – बुध
(20/07/2086 - 27/05/2087)

आपकी सूर्य की महादशा 01/10/2082 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा बुध की है जिसकी अवधि 10 मास 6 दिन रहेगी। यह 20/07/2086 को प्रारंभ होकर 27/05/2087 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध बुद्धिमत्ता, शिक्षा, वाणी का कारक है।

इस अवधि में आपको अचानक किसी यात्रा के लिए निमंत्रण मिल सकता है। आपकी रुचि अध्यात्म और ज्ञान/विज्ञान में हो सकती है। लेखन, प्रकाशन ओर तीर्थयात्रा के लिए समय शुभ है। कानूनी मामलों में सफलता मिलेगी। मानसिक शक्ति प्रबल रहेगी और अध्यापन आदि में सफल रहेंगे। सौभाग्य और समृद्धि आपका इंतज़ार कर रहे हैं। अध्यात्म में सफलता मिल सकती है।

आपके जीवनसाथी या व्यापार में साझेदार को वाक्विद्या से लाभ होगा और भाइयों से सुख मिलेगा। पिता का मन अध्यात्म में लगेगा। माता को मातहतों से लाभ प्राप्त होगा। उनका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, शत्रुओं पर विजय होगी। भाई–बहनों का विवाह हो सकता है, किसी से साझेदारी हो सकती है और धन कमा सकते हैं। आपकी संतान का ज्ञान बढ़ सकता है, साहित्य वाणिज्य, लेखा–जोखा आदि में चमक सकते हैं।

अगर आप सेवारत हैं तो धन में वृद्धि होगी, उच्चाधिकारियों से लाभ होगा। परामर्शदाताओं के खर्चे और यात्राएं बढ़ सकते हैं। व्यापारियों के लिए सुखद परिवर्तन आएंगे।

जांघों के आसपास के अंगों की व्याधियों से बचें। स्नायुतंत्र कमजोर हो सकता है। कष्टों से बचने के लिए दुर्गाजी की उपासना करें।

अंर्तदशा :– सूर्य – केतु
(27/05/2087 - 02/10/2087)

आपके लिए सूर्य की महादशा 01/10/2082 को प्रारंभ हुई थी। इसमें आठवीं अंतर्दशा केतु की है जिसकी अवधि 4 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 27/05/2087 को आरंभ होकर 02/10/2087 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु संन्यास, मंत्रज्ञान ओर कष्टों का कारक है।

इस अंतर्दशा में आपको प्रसिद्धि मिलेगी; ऊर्जा और हिम्मत उत्तम होंगे। लंबी यात्रा हो सकती है। कार्य–व्यवसाय में असंतोष हो सकता है। शत्रुओं पर विजय मिलेगी; महत्वपूर्ण कार्यभार प्राप्त होगा। विदेश में जीवनयापन हो सकता है। पिता के साथ संबंध उत्तम होंगे। वाहन और जायदाद से लाभ मिलेगा; पिता और रिश्तेदार सहयोग करेंगे।

आपके जीवनसाथी की अचल संपत्ति में वृद्धि होगी, भाग्य उत्तम रहेगा, अचल संपत्ति मिलेगी। पिता की आय में वृद्धि होगी; घरेलू जीवन सुखी होगा। माता को साझेदारी से लाभ होगा। भाई–बहनों के जीवन में परिवर्तन आ सकता है; अप्रत्याशित धन मिल सकता है, खर्चे बढ़ेंगे, लंबी यात्राएं होंगी।

आपकी संतान को खेलकूद में रुचि रहेगी, जानवर पालने का शौक होगा, शत्रुओं पर जीत होगी, कर्ज़ अगर हो तो उस से मुक्ति मिलेगी।

अगर आप सेवारत हैं तो सफलता मिलेगी, आय में वृद्धि होगी और उच्चाधिकारियों से सहयोग प्राप्त होगा। परामर्शदाता भाग्यशाली रहेंगे, धन संचित होगा। व्यापारीगणों के निवेश और लाभ में वृद्धि होगी।

आपका स्वास्थ्य सामान्य रहेगा। पैरों की बीमारी, खुजली और फोड़े आदि से बचें। कष्ट से बचने के लिए भूरा श्वान पालें या श्वान को भोजन दें।

अंर्तदशा :– सूर्य – शुक्र
(02/10/2087 - 01/10/2088)

सूर्य महादशा में शुक्र अंतर्दशा होगी।

इस अवधि में आपका दांपत्य सुख उत्तम रहेगा। जीवनसाथी के माध्यम से धनलाभ होगा। व्यापार में धनार्जन होगा। विरासत में अचल संपत्ति मिल सकती है। अध्यात्म में रुचि होगी। दुर्घटना से रक्षा होगी। स्वास्थ्य उत्तम होगा। सुख–सुविधाओं से युक्त रहेंगे। दान–धर्म में रुचि होगी।

आपके जीवनसाथी की प्राच्य विद्या, तंत्र–मंत्र में रुचि हो सकती है। उन्हें अप्रत्याशित धन मिल सकता है। घरेलू सुख उत्तम होगा। आपके पिता के खर्चे बढ़ेंगे, उन्हें शत्रुओं पर विजय मिलेगी। माता को निवेश या सट्टे से धनलाभ हो सकता है। आपके भाई–बहनों

का स्वास्थ्य उत्तम होगा, शत्रुओं पर विजय मिलेगी, कर्ज़ से मुक्ति का योग है। आपकी संतान लोकप्रिय, प्रसन्न, संतुष्ट होगी; परिवार के सदस्यों और मित्रों का उन्हें सहयोग मिलेगा।

अगर आप सेवारत हैं तो आपको सफलता मिलेगी, कार्यालय में संबंध उत्तम रहेंगे, वाक्शक्ति उत्तम रहेगी। परामर्शदाताओं को लाभकारी परिणाम मिलेंगे। व्यापारीगण सकारात्मक अनुबंधों पर हस्ताक्षर करेंगे।

स्वास्थ्य का ध्यान रखें। उत्सर्जन तंत्र, नेत्र और गले के रोगों से बचें। अशुभ से बचने के लिए श्वेत वस्त्र, चावल, चीनी दान में दें।

महादशा :– चन्द्र
(01/10/2088 - 01/10/2098)

चन्द्र महादशा की अवधि दस वर्ष है। आपकी कुण्डली में यह 01/10/2088 को आरंभ और 01/10/2098 को समाप्त होगी।

चन्द्र सप्तम भाव में अवस्थित है। सप्तम भाव कानूरी समझोते, साझेदार अर्थात् जीवन साथी, व्यापार, मुकद्दमें, विदेश में प्रभाव तथा वहां प्राप्त ख्याति और जीवन में खतरे का सूचक है। अतः दस वर्षों की इस अवधि में आपका जीवन सुखी और स्वस्थ होगा। आपका दाम्पत्य जीवन अनुकूल और आनन्ददायक होगा।

स्वास्थ्य :

चंद्र की स्थिति से सप्तम भाव प्रबल हो रहा है। चन्द्र की प्रथम भाव या लग्न पर दृष्टि है, अतः आपका जीवन सुखमय तथा उत्तम होगा और किसी बड़े रोग या चोट की सम्भावना नहीं है।

अर्थ और सम्पत्ति :

सप्तम भाव में अवस्थित चन्द्र भाव को प्रबलित करता है जो साझेदार का भाव है। अतः दस वर्षों की इस अवधि में आपकी संपत्ति और आर्थिक स्थिति में वृद्धि होगी। आपका बैंक बैलेंस बढ़ेगा और आपको जीवन के सुखों की प्राप्ति होगी।

व्यवसाय :

साझेदारी के व्यवसाय से जुड़े हैं तो आपके व्यापार का विकास होगा और यदि नौकरीपेशा हैं तो जीवन में उन्नति के अवसर आएंगे और अपने व्यवसाय का आनन्द प्राप्त करेंगे। यदि व्यवसाय में हैं तो आपके मस्तिष्क में अनेक सुन्दर और अनुकूल व्यवसाय के विचार उभरेंगे जिन्हें चालू किये जाने पर आपको नाम मिलेगा। आप सामाजिक होंगे ओर व्यवसाय के क्रम में यात्राओं पर जा सकते हैं।

पारिवारिक जीवन :

आपका पारिवारिक जीवन अनुकूल और उत्तम होगा। आपके व्यक्तित्व और जीवन साथी के स्वास्थ्य में सुधार होगा जिससे आपको वैवाहिक जीवन का सुख मिलेगा।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

शैक्षिक जीवन में आपकी शिक्षा–अवधि में वृद्धि होगी और आपको सफलता मिलेगी।

अंर्तदशा :– चन्द्र – चन्द्र
(01/10/2088 - 01/08/2089)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष रहेगी। आपके लिए यह 01/10/2088 को प्रारंभ होकर 01/10/2098 को समाप्त होगी। इस महादशा में चंद्र की अंतर्दशा की अवधि 10 मास रहेगी। आपके लिए यह 01/10/2088 को प्रारंभ होकर 01/08/2089 को समाप्त होगी।

चंद्रमा आपकी जन्मपत्री में सप्तम भाव में स्थित है और लग्न पर उसकी दृष्टि है। सप्तम भाव लौकिक संबंध, जीवनसाथी, व्यापार में साझेदार, मुकदमे, विदेश में प्रभाव और जीवन के खतरों का परिचायक है।

इस अवधि में आपका व्यक्तित्व आकर्षक होगा, लोकप्रियता बढ़ेगी और यात्रा में सफलता मिलेगी।

अगर आप अविवाहित हैं तो इस अवधि में विवाह हो सकता है। विवाहित जीवन सुखी रहेगा। विवाह होने पर लाभान्वित होंगे। साझेदारी के व्यापार में लाभ होगा; साझेदार से संबंध उत्तम रहेंगे। शुभत्व में वृद्धि के लिए चंद्र के वैदिक मंत्र के 11000 जाप करें।

अंर्तदशा :– चन्द्र – मंगल
(01/08/2089 - 02/03/2090)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह 01/10/2088 को प्रारंभ होकर 01/10/2098 को समाप्त होगी। इस महादशा में मंगल अंतर्दशा की अवधि 7 मास होगी। आपके लिए यह 01/08/2089 को प्रारंभ होकर 02/03/2090 को समाप्त होगी।

मंगल आपकी जन्मपत्रिका के एकादश भाव में स्थित है। एकादश भाव मित्रगण, समाज, महत्वाकांक्षा, इच्छाएं और उनकी पूर्ति, उद्यम में सफलता, धनलाभ, बड़े भाई, भाग्योदय और टखनों का परिचायक है। इसे लाभ भाव भी कहते हैं। मंगल ऊर्जा और अचल संपत्ति का कारक है। एकादश भाव में स्थित होकर मंगल जन्मपत्रिका के 2,5,6 भावों पर दृष्टि डाल रहा है।

इस अंतर्दशा के दौरान आपके भाषणों में ओज रहेगा, मगर आप क्रोधी हो सकते हैं। आप धनवान बनेंगे और अचल संपत्ति प्राप्त करेंगे। आप साहसी होंगे और उच्चवर्ग में धाक होगी। धन प्राप्ति की आपकी लिप्सा संतृप्त नहीं होगी।

शुभत्व में वृद्धि के लिए प्रतिदिन भौम गायत्री मंत्र का जाप 108 बार करें।

अंर्तदशा :– चन्द्र – राहु
(02/03/2090 - 01/09/2091)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह महादशा 01/10/2088 को प्रारंभ हुई और 01/10/2098 को समाप्त होगी। चंद्र महादशा में राहु की अंतर्दशा की अवधि 18 मास रहेगी। आपके लिए यह 02/03/2090 को प्रारंभ होकर 01/09/2091 को समाप्त होगी।

राहु आपकी जन्मपत्रिका के चतुर्थ भाव में स्थित है। चतुर्थ भाव माता, स्वयं का मकान, घरेलू वातावरण, व्यक्तिगत संबंध, वाहन, बाग–बगीचे, पैतृक संपत्ति, शिक्षा, दूध, तालाब और झील आदि का प्रतिनिधि है। राहु छायाग्रह है। इसकी स्वयं की कोई राशि नहीं होती। यह शुभ, अशुभ दोनों प्रकार से अपनी स्थिति के अनुसार प्रभावी होता है।

इस अवधि में आपका घरेलू जीवन खुशियों से रहित, विचलित हो सकता है। मित्र बहुत कम रहेंगे। आपकी बुद्धिमत्ता में कमी आ सकती है। कोई आपको धोखा दे सकता है। माता–पिता से लाभ हो सकता है। उनमें से एक के साथ आपके संबंधों में कुछ समस्या उत्पन्न हो सकती है।

अरिष्ट से बचाव के लिए 7 रत्ती का गोमेद चांदी की अंगूठी में, कच्चे दूध या गंगाजल से धोकर, अपने इष्टदेव का ध्यान करते हुए, बायें हाथ की मध्यमा उंगली में रात्रि भोजन के बाद धारण करें।

अंर्तदशा :– चन्द्र – गुरु
(01/09/2091 - 31/12/2092)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह 01/10/2088 को प्रारंभ हुई। इस महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा की अवधि 16 मास है। यह आपके लिए 01/09/2091 को प्रारंभ होकर 31/12/2092 को समाप्त होगी।

बृहस्पति आपकी जन्मपत्रिका के प्रथम भाव में स्थित है। प्रथम भाव शारीरिक बनावट, आकृति, स्वास्थ्य, जन्मजात स्वभाव और आदतें, सम्मान, गरिमा, सामान्य शुभत्व, चेहरे का ऊपरी भाग, आयु और जीवन की रुपरेखा आदि का परिचायक है। बृहस्पति की लग्न में स्थित होकर कुंडली के 5, 7, 9 भावों पर दृष्टि है।

इस अंतर्दशा की अवधि में आप धनी बनेंगे, ज्ञान और विवेक की वृद्धि होगी। उत्तम वस्त्र आदि की खरीदारी करेंगे और सामान्यतः प्रसन्नचित रहेंगे। सुख–सुविधाएं भरपूर रहेंगी। व्यायाम करने से स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। यह समय आपके और परिवारजनों के लिए भाग्यशाली रहेगा।

शुभत्व में वृद्धि के लिए गुरु के वैदिक मंत्र के 19000 जाप करें।

अंर्तदशा :– चन्द्र – शनि
(31/12/2092 - 02/08/2094)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। इस महादशा में शनि की अंतर्दशा 1 वर्ष 7 मास रहेगी। आपके लिए चंद्र महादशा 01/10/2088 को प्रारंभ हुई और 01/10/2098 को समाप्त होगी। शनि अंतर्दशा 31/12/2092 को प्रारंभ होकर 02/08/2094 को समाप्त होगी।

शनि आपकी जन्मपत्रिका के प्रथम भाव में स्थित है। प्रथम भाव शारीरिक बनावट, आकृति, स्वास्थ्य, जन्मजात स्वभाव और आदतें, सम्मान, गरिमा, सामान्य शुभत्व, चेहरे का ऊपरी भाग, आयु और जीवन की रुपरेखा आदि का परिचायक है। लग्न में स्थित होकर शनि आपकी कुंडली के 3,7,10 भावों पर अपनी दृष्टि डाल रहा है।

इस अवधि में आप अधार्मिक और परंपराविरुद्ध हो सकते हैं। स्वास्थ्य कमजोर हो सकता है। वातरोगों से बचाव करें। अधिकारी वर्ग अप्रसन्न हो सकता है। सत्ताच्युत हो सकते हैं।

हर कदम पर सावधानी की आवश्यकता है। अरिष्ट से बचाव के लिए सोने या चांदी में जड़ा हुआ नीली रत्न दाहिनी हाथ की मध्यमा उंगली में, शनिवार के दिन रात्रि भोजन के बाद, पूजा करने के बाद धारण करें। काले घोड़े की नाल का छल्ला भी दाहिने हाथ की मध्यमा उंगली में शनिवार की रात्रि में धारण करें।

अंर्तदशा :– चन्द्र – बुध
(02/08/2094 - 01/01/2096)

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष है। इस महादशा में बुध की अंतर्दशा 1 वर्ष 5 मास रहेगी।

आपके लिए चंद्र महादशा 01/10/2088 को प्रारंभ हुई थी और 01/10/2098 को समाप्त होगी। इसमें बुध की अंतर्दशा 02/08/2094 को प्रारंभ होकर 01/01/2096 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्रिका के नवम भाव में स्थित है। नवम भाव श्रद्धा, भाग्य, धार्मिक और आध्यात्मिक विचार, अंतर्ज्ञान, भविष्यज्ञान, उपासनास्थल, पिता, धर्मगुरु, लंबी यात्राएं, हवाई यात्रा, उच्च शिक्षा और घुटनों का प्रतिनिधि है। बुध नवम भाव में स्थित होकर कुंडली के तृतीय भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व पर प्रभावी हो रहा है। इस अवधि में आप ज्ञान और धन अर्जित करेंगे। आपका दृष्टिकोण वैज्ञानिक रहेगा। आप देश–विदेश में व्याख्यान दे सकते हैं। विदेश से आपके लिए आमंत्रण आ सकते हैं। पिता के साथ आपके संबंध मधुर रहेंगे।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए बुध के तांत्रिक मंत्र के 36000 जाप करें।

अंर्तदशा :– चन्द्र – केतु
(01/01/2096 - 01/08/2096)

चंद्रमा की महादशा की अवधि 10 वर्ष है। इसके अंतर्गत केतु अंतर्दशा 7 मास की रहेगी। आपके लिए चंद्र महादशा 01/10/2088 को प्रारंभ हुई ओर 01/10/2098 को समाप्त होगी। केतु अंतर्दशा 01/01/2096 को प्रारंभ होकर 01/08/2096 को समाप्त होगी।

केतु आपकी जन्मपत्रिका के दशम भाव में स्थित है। दशम भाव सम्मान, जनता, सत्ता, सफलता, पद और साख, दुनियादारी, प्रोन्नति, नियुक्ति, धार्मिक कार्य, सरकार से सम्मान और जांघों का परिचायक है। दशम में स्थित होकर केतु आपकी कुंडली के चतुर्थ भाव पर दृष्टि द्वारा प्रभाव डाल रहा है।

इस अंतर्दशा की अवधि में आप साहसी और प्रसिद्ध होंगे। आपकी प्रवृत्ति दुष्कर्मों में हो सकती है। महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति में बाधाएं आएंगी। इन सबके बावजूद आप प्रसन्न, धार्मिक रहेंगे और धर्मग्रंथों का अध्ययन करेंगे। गरीबों की सेवा करेंगे।

अरिष्ट से बचाव के लिए केतु के तांत्रिक मंत्र के 72,000 जाप करें।

अंर्तदशा :– चन्द्र – शुक्र
(01/08/2096 - 02/04/2098)

चंद्र की महादशा की अवधि 10 वर्ष है। आपके लिए यह 01/10/2088 को प्रारंभ होकर 01/10/2098 को समाप्त होगी।

इस महादशा में शुक्र की अंतर्दशा 1 वर्ष 8 मास रहेगी। आपके लिए यह 01/08/2096 को प्रारंभ होकर 02/04/2098 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्रिका के अष्टम भाव में स्थित है। अष्टम भाव आयु, विरासत, दुर्घटना, दुर्भाग्य, दुख, चिंता, निराशा, हानि, बाधा, चोरी और डकैती का प्रतिनिधि है।

इस अवधि में आप सौभाग्यशाली होंगे। धन–धान्य से परिपूर्ण रहेंगे। सब सुख–सुविधाएं उपलब्ध रहेंगी। भावनात्मक समस्याओं से सावधान रहें।

अरिष्ट से बचाव के लिए निम्न उपाय करें :

1. चींटियों को शक्कर और आटा दें।
2. कन्याओं को खीर खिलाएं।
3. भोजन से पहली चपाती निकालकर गाय को दें।
4. लक्ष्मीजी की उपासना करें।

अंर्तदशा :– चन्द्र – सूर्य
(02/04/2098 - 01/10/2098)

चंद्रमा की महादशा की अवधि 10 वर्ष होगी। आपके लिए यह 01/10/2088 को प्रारंभ होगी और 01/10/2098 को समाप्त होगी।

इस महादशा में सूर्य की अंतर्दशा की अवधि 6 मास होगी जो आपके लिए 02/04/2098 से प्रारंभ होकर 01/10/2098 को समाप्त होगी।

सूर्य आपकी जन्मपत्रिका में नवम भाव में स्थित है। नवम भाव श्रद्धा, भाग्य, धार्मिक और आध्यात्मिक विचार, अंतर्ज्ञान, भविष्यज्ञान, उपासनास्थल, पिता, धर्मगुरु, लंबी यात्राएं, हवाई यात्रा, उच्च शिक्षा और घुटनों का प्रतिनिधि है। सूर्य सबसे शक्तिशाली ज्योतिपुंज है।

इस अवधि में आपकी अध्यात्म और धर्म में प्रगति होगी। पुत्रों से लाभ होगा और स्वयं के प्रयास से जायदाद का निर्माण करेंगे। स्वास्थ्य उत्तम होगा। पैतृक संपत्ति प्राप्त हो सकती है। आपकी महत्वाकांक्षा प्रबल होगी जिससे उद्यमशीलता में वृद्धि होगी। सूर्य पिता और आत्मा का कारक होता है। आप पिता और गुरु के भक्त रहेंगे।

अरिष्ट निवारण और शुभत्व में वृद्धि हेतु सूर्य के वैदिक मंत्र के जाप 7000 बार करें। प्रत्येक दिन प्रातःकाल सूर्य को अर्घ अर्पित करें।

महादशा :– मंगल
(01/10/2098 - 02/10/2105)

मंगल की महादशा 01/10/2098 को आरम्भ होगी और 7 वर्ष की होकर 02/10/2105 को समाप्त होगी। आपकी जन्म कुण्डली में मंगल एकादश भाव में स्थित है। मंगल की दशा में आपको शुभ फल मिलेगा इसके पूर्व आपकी 10 वर्ष की चन्द्र दशा चल रही थी। आपको हर प्रकार का लाभ, आराम ओर सुखमय पारिवारिक जीवन मिला होगा। इस दशा के दौरान आपको सफलता और हर प्रकार का लाभ मिलेगा और आप लोकप्रिय होंगे।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। मंगल के कारण आपमें स्फूर्ति, जीवन शक्ति और रोग से लड़ने की क्षमता होगी। आप स्वतंत्र विचार के व्यक्ति हैं और आप अपना विरोध बरदाश्त नहीं कर सकते। इस दशा के दौरान आप अपने नेतृत्व गुणों का प्रदर्शन करेंगे। आप कृत संकल्प होंगे और आप में शक्ति व आत्मविश्वास होगा। आप दाँत और ताप से सम्बद्ध संक्रामक बीमारी से पीड़ित हो सकते हैं। इस दशा के दौरान आपको कोई बड़ी बीमारी नहीं होगी।

अर्थ और व्यवसाय :

जहाँ तक अर्थ का प्रश्न है, आपके लिए यह दशा अति उत्तम होगी। आपको निवेश तथा सट्टे से लाभ होगा। व्यापार–व्यवसाय से उपार्जन में वृद्धि होगी और आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी। आप धनसंचय करेंगे और आपकी सम्पत्तियों में वृद्धि होगी। नौकरीपेशा लोगों के कार्य–स्थान में स्थिति अनुकूल होगी। आपके अधीनस्थ तथा सहकर्मी आपका सहयोग करेंगे। व्यवसाय से उपार्जन में वृद्धि होगी और आपके अधिक प्रयास किये बगैर सफलता मिलेगी। हर प्रकार का लाभ मिल सकता है। व्यापारियों के लाभ में वृद्धि होगी। संगठन में परिवर्तन हो सकता है जो अन्ततः लाभदायक सिद्ध होगा। जीविका के लिए सैन्य सेवा, सर्जरी, दवा के क्षेत्र, लोहा–इस्पात उद्योग से सम्बद्ध, व्यवसाय आदि का चयन कर सकते हैं। योजना और प्रशासन से सम्बद्ध कार्य में आप अच्छा करेंगे। आप रसायन, समुद्री उत्पाद या कुटीर उद्योग का चयन कर सकते हैं। आप एक सफल दन्तचिकित्सक या सर्जन हो सकते हैं या आपका तकनीकी या कृषि जीवन सफल होगा।

वाहन, यात्रा, जमीन–जायदाद :

मंगल और बुध की अन्तर्दशा के दौरान आपको वाहन–सुख मिलेगा। सूर्य की अन्तर्दशा में आपकी यात्राएं होंगी। शनि तथा शुक्र की अन्तर्दशा में आपकी लम्बी यात्राएं हो सकती हैं। इस दशा में आपको जमीन जायदाद और अचल सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। आपको कुछ पैतृक सम्पत्ति की प्राप्ति भी हो सकती है।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी तकनीकी शिक्षा उत्तम होगी। आप परीक्षाओं तथा

प्रतियोगिताओं में सफल होंगे। तकनीकी विषय, गणित, विधि, इन्जीनियरिंग या चिकित्सा के विषय आपके लिये उपयुक्त होंगे। खेल तथा अन्य बाहरी गतिविधियों में आपकी रुचि होगी। आप कार्यक्रमों के आयोजन में अग्रणी होंगे तथा अपने नेतृत्व के गुणों का प्रदर्शन करेंगे।

परिवार :

परिवार में आपके सम्बन्ध मधुर रहेंगे। आपके बच्चे बहुत अच्छा करेंगे और उन्हें यश, ख्याति तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। आपके जीवन साथी के लिए समय भाग्यशाली होगा और उनकी आय, सम्पत्ति तथा जमीन–जायदाद में वृद्धि होगी। आपके जीवनसाथी के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। आपकी माता को कुछ स्वास्थ्य समस्याएं हो सकती हैं। उन्हें सम्पत्ति की प्राप्ति हो सकती है। आपके पिता का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, उनकी छोटी यात्राएँ होंगी और सम्बन्धियों से लाभ प्राप्त होगा। आपके छोटे भाई–बहनों को समृद्धि मिलेगी, उनकी लम्बी यात्राएँ होगी और पिता से लाभ प्राप्त होगा। आपके बड़े भाई–बहनों की परियोजनाएं सफल होंगी, उन्हें यश और ख्याति की प्राप्ति होगी और उनका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके भाई–बहनों के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। आप के मित्रों की संख्या विशाल होगी जो आपकी बहुत सहायता करेंगे। आपको थोड़े प्रयास से ही सफलता मिलेगी और अनेक मनोकामनाएं पूरी होंगी।

अन्तर्दशा :

मंगल की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा आपके लिये शुभ होगी, आपकी आय तथा सम्पत्ति में वृद्धि होगी और आपका निवेश सफल होगा। आगे राहु की अन्तर्दशा आपके लिए कुछ समस्याएं खड़ी कर सकती है। गुरु की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको साझेदारी में कुछ लाभ तथा जीवन वृत्ति में उन्नति होगी। शनि की अन्तर्दशा कुछ मिश्रित फल देगी और आपके कार्य में परिवर्तन होगा और यात्रा तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी। लग्नेश बुध के कारण आपको यश, ख्याति, सफलता तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। केतु कुछ मानसिक तनाव दे सकता है। शुक्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको बच्चों से सुख मिलेगा तथा निवेश सफल रहेगा। सूर्य के कारण आपकी छोटी यात्राएँ हो सकती हैं तथा भाइयों से सुख मिल सकता है। चन्द्र की अन्तर्दशा के फलस्वरूप आपको हर प्रकार का लाभ मिल सकता है, आपका पारिवारिक जीवन उत्तम रहेगा।

अंर्तदशा :– मंगल – मंगल
(01/10/2098 - 28/02/2099)

आपके लिए मंगल की महादशा 01/10/2098 को प्रारंभ हुई है। इस महादशा के अंतर्गत प्रथम अंतर्दशा मंगल की होगी जिसकी अवधि 4 मास 27 दिन है। आपके लिए यह 01/10/2098 को प्रारंभ होकर 28/02/2099 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल वीरता, साहस, अचल संपत्ति और भाइयों का कारक है।

इस अवधि में आप धनी, सम्मानित और प्रसिद्ध होंगे। जीवन में खुशियां रहेंगी। आकांक्षाओं की पूर्ति हो सकती है। संतान सुखकारी होगी। शत्रुओं पर विजय मिलेगी। आप शक्तिशाली और सफल होंगे। मातहत सहयोग करेंगे। धनागम होगा, मगर खर्चे भी बढ़ेंगे। कटु वचन बोलने से बचें।

आपके जीवनसाथी को निवेश से लाभ होगा; जीवन में अचानक अप्रत्याशित परिवर्तन हो सकता है। उन्हें धन का लाभ होगा। आपके पिता को परिश्रम करना होगा; उन्हें छोटी–मोटी बीमारियों से बचाव करना चाहिए। माता को अप्रत्याशित लाभ हो सकता है। भाई–बहन धन कमाएंगे; स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

आपकी संतान को सफलता और प्रसिद्धि मिलेगी; परीक्षा में सफल होंगे, साझेदारी से लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो मातहत सहयोग करेंगे; उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं और व्यापारियों की आय बढ़ेगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, हाथ–पैरों में कुछ कष्ट हो सकता है। मंगल के गायत्री मंत्र का जाप लाभदायक रहेगा।

अंर्तदशा :– मंगल – राहु
(28/02/2099 - 18/03/2100)

आपके लिए मंगल की महादशा 01/10/2098 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में दूसरी अंतर्दशा राहु की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 18 दिन होगी। आपके लिए यह 28/02/2099 को प्रारंभ होकर 18/03/2100 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक लाभ, परिवर्तन और लंबी यात्राओं का कारक है।

इस अवधि में आप भूमि या अन्य अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं। माता के माध्यम से धनागम हो सकता है। घरेलू सुख मिलेगा। अचानक अप्रत्याशित घटनाएं हो सकती हैं। आप प्रसिद्ध हो सकते हैं; अधिकारी प्रसन्न रहेंगे। कार्यक्षेत्र में परिवर्तन हो सकता है। विभिन्न धर्मों के लोगों से लाभ होगा।

आपके जीवनसाथी का जीवन सफल रहेगा। आपके पिता को साझेदारों से लाभ हो

सकता है। माता भाग्यशाली रहेंगी, उन्हें सब सुख–सुविधाएं उपलब्ध रहेंगी; शत्रुओं पर विजय होगी। आपके भाई–बहनों को अचानक लाभ हो सकता है; वे परिवार से थोड़े दिनों के लिए दूर जा सकते हैं। उनके व्यापार में प्रगति होगी, शत्रुओं पर विजय मिलेगी, खेलकूद में दिलचस्पी लेंगे।

आपकी संतान के स्थान में परिवर्तन हो सकता है। अगर वे कार्यरत हैं तो व्यापार में प्रगति होगी, विदेश जा सकते हैं।

अगर आप सेवारत हैं तो अप्रत्याशित स्थान से मदद मिल सकती है। परामर्शदाताओं को साझेदारी में लाभ होगा।

व्यापारी सफल रहेंगे, धनलाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य सामान्यतः उत्तम रहेगा। छाती के रोगों से बचाव करें। अरिष्ट से बचाव के लिए शिवजी की पूजा शनिवार को भैरवजी के रूप में करें।

अंर्तदशा :– मंगल – गुरु
(18/03/2100 - 22/02/2101)

आपकी मंगल की महादशा 01/10/2098 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में तीसरी अंतर्दशा बृहस्पति की होगी जिसकी अवधि 11 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 18/03/2100 को प्रारंभ होकर 22/02/2101 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति विवेक, संतान और आध्यात्मिकता का कारक है।

इस अवधि में आपको सब सुख उपलब्ध रहेंगे। उच्चपद पर आसीन हो सकते हैं। धन और सम्मान में वृद्धि होगी। शत्रुओं पर विजय होगी। कार्यक्षेत्र में अचानक सकारात्मक परिवर्तन हो सकता है। संतान का जन्म संभव है। विवाह हो सकता है। चुनाव में या कार्यों में सफलता मिल सकती है। मुकदमे में विजय होगी। घरेलू सुख रहेगा। लंबी यात्रा या तीर्थयात्रा संभव है। नये अवसर उपलब्ध होंगे।

आपके जीवनसाथी को उच्चपद और धन का लाभ हो सकता है। पिता को सट्टेबाजी से लाभ संभव है। माता को सब सुविधाएं उपलब्ध होंगी, तीर्थयात्रा करेंगी। आपके भाई–बहन धन कमाएंगे; कार्यक्षेत्र में सफल रहेंगे; उनकी आकांक्षाएं पूर्ण होंगी।

आपकी संतान को परीक्षा में सफलता मिलेगी, ज्ञानार्जन करेंगे। अगर वे सेवारत हैं तो समृद्ध बनेंगे, लंबी यात्राएं होंगी, प्रसिद्ध होंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो अचानक लाभ और सकारात्मक परिवर्तन का योग है। परामर्शदाता अचल संपत्ति क्रय करेंगे; धनी बनेंगे। व्यापारियों के लाभ में वृद्धि होगी।

स्वास्थ्य और कार्यक्षमता उत्तम होंगे। शुभत्व में वृद्धि के लिए पीले अनाज, स्वर्ण और

हल्दी का दान करें।

अंर्तदशा :– मंगल – शनि
(22/02/2101 - 03/04/2102)

आपके लिए मंगल की महादशा 01/10/2098 को आरंभ हुई थी। इस महादशा में चौथी अंतर्दशा शनि की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 1 मास 9 दिन रहेगी। आपके लिए यह 22/02/2101 को प्रारंभ होकर 03/04/2102 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु, सेवा और पश्चिम दिशा का कारक है।

इस अवधि में प्रोन्नति हो सकती है, सम्मान मिलेगा। व्यापार में लाभ होगा। विवाह हो सकता है। विदेश यात्रा संभव है। जिम्मेदारी बढ़ सकती है। समृद्धि बढ़ेगी। कार्यों में सफलता मिलेगी, उच्च पद प्राप्त होगा। गंभीर अध्ययन में व्यस्त रह सकते हैं। लेखन या शोध में मन लग सकता है।

आपके जीवनसाथी व्यापार में प्रगति करेंगे। आपके पिता जायदाद क्रय कर सकते हैं, उनकी प्रोन्नति होगी, सर्जनात्मक कार्य करेंगे। माता की समृद्धि में वृद्धि होगी। आपके भाई–बहन सफल होंगे, वे बुद्धिमानी से निवेश करेंगे और उनके प्रभावशाली मित्र होंगे।

आपकी संतान शिक्षा में परिश्रम करेगी; उन्हें उच्चशिक्षा में प्रवेश मिल सकता है। अगर वे सेवारत हैं तो प्रसिद्धि और वांछित स्थान पर तबादले का योग है।

अगर आप सेवारत हैं तो अवांछित स्थान पर तबादला हो सकता है। परामर्शदाता और व्यापारी धनी बनेंगे।

स्वास्थ्य सामान्यतः अच्छा रहेगा मगर सुस्ती और निराशा से बचें। अरिष्ट से बचाव के लिए शनि महाराज की स्तुति करें।

अंर्तदशा :– मंगल – बुध
(03/04/2102 - 31/03/2103)

आपके लिए मंगल की महादशा 01/10/2098 को प्रारंभ हुई थी। इसमें पांचवी अंतर्दशा बुध की है जिसकी अवधि 11 मास 27 दिन है। आपके लिए यह 03/04/2102 को प्रारंभ होकर 31/03/2103 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध वाणी, शिक्षा और सम्मान का कारक है।

इस अवधि में आपकी लंबी यात्रा हो सकती है। प्रकाशन कार्य के लिए समय शुभ है। पत्रलेखन से लाभ होगा। उच्च शिक्षा के अवसर मिलेंगे। बहुत से मित्र होंगे। सांस्कृतिक कार्यक्रमों में दिलचस्पी बढ़ेगी। शिक्षा, विज्ञान या धर्म से संबंधित यात्रा हो सकती है। भाई–बहनों से संबंध उत्तम रहेंगे। धन कमा सकते हैं। जनसंपर्क से लाभ होगा।

आपके जीवनसाथी विचारों की उत्तम प्रस्तुति द्वारा या कमीशन कार्य से धन कमा सकते हैं। आपके पिता समृद्ध और प्रसन्न होंगे। माता समाजकार्य में रुचि लेंगी। भाई–बहनों को भागीदारी, व्यापार, विवाह से लाभ हो सकता है। उनके प्रभावशाली मित्र होंगे, आकांक्षाएं पूर्ण होंगी।

आपकी संतान को उच्चशिक्षा में सफलता मिलेगी, भाग्य उत्तम रहेगा।

अगर आप सेवारत हैं तो साख में वृद्धि होगी, कार्य में प्रगति करेंगे। परामर्शदाताओं के खर्चे बढ़ेंगे, यात्राएं होंगी। व्यापारियों को यात्रा और व्यापार से लाभ होगा।

स्नायविक थकान और पैरों की व्याधि से बचें। शुभत्व में वृद्धि के लिए मूंग की दाल दान में दें।

अंर्तदशा :– मंगल – केतु
(31/03/2103 - 27/08/2103)

आपके लिए मंगल की महादशा 01/10/2098 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में छठी अंतर्दशा केतु की है जिसकी अवधि 4 मास 27 दिन रहेगी। आपके लिए यह 31/03/2103 को प्रारंभ होकर 27/08/2103 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु नाना और मोक्ष का कारक है।

इस अवधि में आप नेता बनेंगे। चुनाव में या मुकदमे में जीत सकते हैं। उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। प्रसिद्धि मिलेगी। अध्यात्म और दर्शन में रुचि हो सकती है। मितव्ययता द्वारा धन का संचय करेंगे। शत्रुओं पर विजय मिलेगी। आप साहसी, लोकप्रिय और बुद्धिमान होंगे। अचल संपत्ति, भूमि, वाहन आदि क्रय कर सकते हैं। प्रसन्नचित्त रहेंगे।

आपके जीवनसाथी अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं, परिवार में खुशी रहेगी। आपके पिता खुश रहेंगे, धनार्जन उत्तम होगा। आपकी माता को साझेदार के माध्यम से धनार्जन हो सकता है; यात्रा और धनलाभ का योग है। आपके भाई–बहनों के जीवन में अप्रत्याशित परिवर्तन हो सकते हैं; साझेदार के माध्यम से धनलाभ होगा, खर्चे बढ़ सकते हैं, यात्राएं होंगी।

आपकी संतान स्पर्धियों पर विजय प्राप्त करेगी, वाक्चातुर्य और बहस में उत्तम होंगे, शिक्षा में नाम कमाएंगे। अगर वे कार्यरत हैं तो धन कमाएंगे, सफल रहेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो भाग्यशाली रहेंगे। परामर्शदाताओं को धन का लाभ होगा जबकि व्यापारियों को पहले किये निवेश से लाभ मिलेगा।

आपका स्वास्थ्य सामान्यतः उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए कंबल, उड़द की दाल और सतनजा दान में दें।

अंर्तदशा :– मंगल – शुक्र
(27/08/2103 - 26/10/2104)

आपके लिए मंगल की महादशा 01/10/2098 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अन्तर्दशा शुक्र की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 2 मास होगी। आपके लिए यह 27/08/2103 को प्रारंभ होकर 26/10/2104 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शुक्र सौंदर्य, कला और नफासत का कारक है।

इस अवधि में आप हर प्रकार से समृद्ध बनेंगे। साझेदार के माध्यम से या विरासत में धन या अचल संपत्ति प्राप्त हो सकते हैं। घरेलू सुख उत्तम होगा। व्यापार में आय बढ़ेगी। सम्मान में वृद्धि होगी। प्रसन्नचित्त रहेंगे। उत्तम वस्त्र और भोजन उपलब्ध होंगे। परिवार में खुशहाली रहेगी। विभिन्न माध्यमों से धनार्जन होगा। दान–धर्म में रुचि लेंगे। परिवाजन और मित्र इज्ज़त करेंगे।

आपके जीवनसाथी विभिन्न माध्यमों से धनार्जन करेंगे। आपके पिता के खर्चे बढ़ सकते हैं, शत्रुओं पर विजय मिलेगी, सुख–साधन उपलब्ध रहेंगे। माता सौभाग्यशाली रहेंगी, प्रसिद्ध और धनी बनेंगी, मित्र उनकी मदद करेंगे। भाई–बहनों का स्वास्थ्य उत्तम होगा, शत्रु परास्त होंगे, कार्यालय उत्तम रहेगा।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी, परीक्षा में सफलता मिलेगी।

अगर आप सेवारत हैं तो मातहत सहयोग करेंगे। परामर्शदाता धन कमाएंगे जबकि व्यापारियों की आय में वृद्धि होगी।

स्वास्थ्य का ध्यान रखें। मामूली तकलीफ का तुरंत इलाज करवाएं। अरिष्ट से बचाव के लिए शुक्र के मंत्र का जाप करें।

ऊँ शुं शुक्राय नमः

अंर्तदशा :– मंगल – सूर्य
(26/10/2104 - 03/03/2105)

आपकी मंगल की महादशा 01/10/2098 को प्रारंभ हो रही है । मंगल महादशा के अंतर्गत सूर्य की अंतर्दशा की अवधि 4 मास 6 दिन है। आपके लिए सूर्य की अंतर्दशा 26/10/2104 को प्रारंभ होकर 03/03/2105 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य आत्मा, स्वास्थ्य और ऊर्जा का कारक है।

इस अवधि में आपका भाग्य उत्तम होगा, धनी बनेंगे। पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा। उच्चशिक्षा के लिए प्रवेश मिल सकता है। शिक्षा से संबंधित यात्राएं संभव हैं। दूरस्थ स्थान की यात्रा हो सकती है। ज्योतिषियों और दार्शनिकों के लिए समय शुभ है। अध्यात्म में रुचि रहेगी।

आपके जीवनसाथी को व्यापार में लाभ होगा, उच्चपद प्राप्त होगा, सुविधाएं उत्तम रहेंगी। आपके पिता को सफलता और उन्नति मिलेंगी। माता का स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, खुशी मिलेगी, विरोधी परास्त होंगे और धनलाभ होगा। भाई–बहनों की आकांक्षाओं की पूर्ति होगी, वांछित स्थान पर तबादला होगा, विवाह और व्यापार में लाभ संभव है। आपकी संतान की शिक्षा पूर्ण होगी, इच्छाओं की पूर्ति होगी, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। अगर आप सेवारत हैं तो उन्नति, उच्चाधिकारियों से लाभ और सम्मान का संकेत है। परामर्शदाताओं के खर्चे बढ़ेंगे। व्यापारियों से कर्मचारी सहयोग करेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए सूर्य की आराधना करें।

अंर्तदशा :– मंगल – चन्द्र
(03/03/2105 - 02/10/2105)

आपके लिए मंगल की महादशा 01/10/2098 को प्रारंभ हुई और को समाप्त होगी। इस महादशा में चंद्र अंतर्दशा 7 मास की होगी और 03/03/2105 को प्रारंभ होकर 02/10/2105 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र माता, प्रसन्नता और मस्तिष्क के रुझान का कारक है।

इस अवधि में आप धन कमाएंगे और प्रसन्न रहेंगे। विवाहित जीवन सुखी रहेगा। अविवाहितों के विवाह संभव हैं। कार्यक्षेत्र में सफलता मिलेगी। व्यापार में विशेषकर जल से संबंधित कार्य में उन्नति होगी। समाज में लोकप्रियता बढ़ेगी। विवाह से या व्यापार में साझेदार से धनलाभ हो सकता है। मुकदमे और जनता से भी लाभ हो सकता है। जीवन का उत्थान होगा। निवास, कार्य और नौकरी आदि में परिवर्तन की इच्छा बलवती होगी।

आपके जीवनसाथी को सफलता मिलेगी। पिता को धन और संतान से खुशी की प्राप्ति होगी। माता अचल संपत्ति क्रय कर सकती हैं; समृद्ध होंगी। भाई–बहन निवेश से धन कमा सकते हैं; प्रसन्न रहेंगे। बड़े भाई–बहनों को पिता से लाभ होगा; धन, यात्रा और अध्यात्म में रुचि का योग है।

आपकी संतान कला और संचार माध्यम में सफल होगी। अगर वे सेवारत हैं तो बहुत सफल होंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो धन कमाएंगे और सामाजिक कार्यों में रुचि लेंगे। परामर्शदाता सफल और प्रसिद्ध होंगे। व्यापारी तीव्र प्रगति करेंगे।

स्वास्थ्य का, विशेषकर प्रजनन तंत्र के अंगों का ध्यान रखें। शुभत्व में वृद्धि के लिए चावल, सफेद चप्पल और सफेद वस्त्र दान दें।